छाहरियो मँगैए छाहरि

छाहरियो मँगैए छाहरि

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN :000-00-00000-00-0

छाहरियो मँगैए छाहरि
(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : 200 रु.

आवरण पर : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Chhahario Mangaiye Chhahari
A Collection Of Maithili Poems By **kamini**
First Edition : 2024, Price : Rs 200/-

ई पोथी
अपन भाइ साहबकेँ समर्पित करैत छियनि जे
श्रीकृष्ण जकाँ सुयोग्य सारथि बनि
जीवनक हर एक कुरुक्षेत्रमे संग निभौलनि।

छाहरियो मँगैए छाहरि : 6

अपन बात

बहुत विद्वदजन कहैत छथि— पद्य बहुत भेल कामिनी, आब गद्य लीखू। हमहुँ मनैत छी ई बात। कहियो पढ़ने रही— गद्य कवीनां निकषम् वदन्ति।'' गद्य कविक कसौटी मानल जाइत अछि। जाहि पर ओकरा कसल जाइत छैक। कविता काल-विशेषमे उत्पन्न होइत अछि आ लिखलो जाइत अछि, जाहिमे सम्पूर्ण मानवीय भाव-अभाव गुण-दोषक चर्चा संभव नहि। ई सभ गद्येक माध्यमसँ संभव अछि जाहिमे मानवीय जीवनक सम्पूर्ण चरित्र चित्रण कयल जाइत अछि। भोरसँ लऽकेँ राति धरिक लेखा-जोखा राखल जाइत अछि। जन्मसँ लऽकेँ मृत्यु धरिक सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार समाहित कयल जाइत अछि, चाहे उपन्यासक माध्यमे, चाहे कथाक माध्यमे, चाहे नाटके-निबंध कियैक ने हो, गद्य पद्यक अपेक्षा अपन बात रखबामे सक्षम होइत अछि सभ तरहें।

एकर मतलब ई नहि जे गद्यक महत्व बेसी रहने पद्यक महत्व कम अछि। काल विशेषेक चर्चा कियैक ने हो, पद्योक अपन महत्ता अछि। संस्कृत साहित्यमे पैघसँ पैघ महाकाव्यक रचना भेल अछि जकर आधार पद्ये अछि आ ओ सभ महाकाव्य कालजयी रचना साबित भेल अछि। छोटसँ छोट आकार आ प्रकारमे रहितहुँ पद्य अपन विस्तृत व्याख्या पर लोककेँ विवश कऽ दैत अछि। किछु पद्यक तऽ एक-एक पाँती एतेक धीर-गंभीर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि जकर व्याख्या लेल गद्यक हजारो पाँती कम पड़ि जाइत अछि।

हम गद्य नहि लिखलहुँ से बात नहि अछि। लेखनक शुरूआतेमे पाँचटा नाटक लिखने रही। लिखैक एतेक भूत सवार रहय माथ पर जे पाँच दिनमे एकटा नाटक लिखिकऽ समाप्त करी। लिखैक सिवाय दोसर कोनो काज नीके नहि लागय। भरि दिन पढ़ी आ लिखी। ओहि समयमे गाममे रहैत रही। जाड़क मास रहय जहिया हम पाँचो नाटक लिखने रही। मोथीक पटिया पर बैसि बीच खरिहानमे सुतरीबला बोरा पर बैसि घरमे लिखी नाटक। ताहि दिनमे खढ़क घर रहय, जाड़ो बहुत होइत रहैक। महिना-महिना दिन धरि सूर्यक दर्शन नहि होइ लोककेँ। गरम कपड़ाक अभावे सन रहैक

लोक लग। हमरो सभ लग तेहने सन बात। एकटा ऊनक साल रहय जकरा लपेटि जेना-तेना जाड़ बिताबी। गाममे स्वेटर-टोपीक चलन नहि रहय पहिने। ओ तऽ बहुत बादमे एकर चलन भेल। तखन मैंयाँ दीदीकेँ कहि पठेलखिन समाद सासुर– ''गौरीकेँ कहबै एकरा दुनू भाइ-बहिन लेल ऊन कीनिकऽ स्वेटर बुनिकऽ पठा देतै, जे लागत लगतै से हम पठा देबै पाइ।'' (ज्ञातव्य हो कि 'गौरी' हमर दीदीक नाम रहनि) एहि तरहें हमरा भाइ-बहिनकेँ पहिल स्वेटर नसीब भेल आ जखन पहिल बेर स्वेटर पहिरलहुँ तखन बुझलहुँ ऊनक मर्म। तकर बादे पता चलल जे बिनु स्वेटरकेँ हम सभ कतेक तकलीफमे जीवन बिता रहल छलहुँ।

मुदा हमरा लग एकोटा नाटक उपलब्ध नहि अछि आइ। कारण हम एकोटा नाटककेँ छपेबे नहि केलहुँ कहियो। सत पूछी तऽ बुझबे नहि करियै ताहि दिनमे जे लिखलाक बाद छपेनाइ कतेक जरूरी होइत छैक कोनो रचनाकेँ सुरक्षित रखबाक लेल। पिता रहथि किसान। खेतेक आड़ि पर सूर्योदय होनि हुनक आ खेतेक आड़ि पर सूर्यास्तो। सूर्यास्तक बाद हारल-थाकल घुरथि घर आ जे कोन-साग थारीमे आबनि आगू, बिना कोनो प्रतिक्रियाकेँ खा लेथि आ राम-राम करैत सुति रहथि, भोरमे पुनः जगबाक लेल। आब दिन-दुनियाँमे कतय की होइत छैक, एहिसँ कोनो सरोकार नहि रहनि हुनका। हालाँकि जेना-तेना समय निकालिकऽ पढ़नाइ-लिखनाइ वैह सिखेलथि हमरा।

कखनो घूर लग बैसिकऽ तऽ कखनो माल-जाल लेल कुट्टी कटैत-कटैत। हमरा मोने अछि एखनो हाट परसँ पिता मनोहर पोथी कीनिकऽ अनने रहथि हमरा लेल आ हम ओहि मनोहर पोथीसँ सीखने रही 'अ' सँ अनार 'आ' सँ आम 'क' सँ कटहर 'ख' सँ खरगोश। दू कानसँ बीस कान धरिक खाँत रटेबाक बहुत प्रयास केलनि पिता, धरि सरियाकऽ कहियो नहि आयल हमरा ओ बीसो कान धरिक खाँत। सैह कारण रहल जे गणितमे हम सभ दिन कमजोरे रहलहुँ। हास-परिहासमे कएक बेर अपने कहियो दैत छथि– दू जोड़ दूसँ बेसी अबितो अछि? नहि अबैत अछि। सत्यकेँ स्वीकारलासँ रस्ता आसान भऽ जाइत छैक। अपने गणितसँ एम.ए. छथि। तिनकर घरवाली दू जोड़ दू वाली। हास-परिहास तऽ बनितहि छैक।

माय एकदम निरक्षर रहय।. कही जे ओकरा निरक्षर राखल गेल

रहैक, सामाजिक वंचनाक तहत। ई कहिकऽ जे बेटा पढ़त तऽ दिन-दुनियाँ देखत, बेटी पढ़िकऽ की करत? घरे-अँगना तँ सम्हारत। भानसे-भात तऽ करत।'' हालाँकि मायकेँ पढ़बाक बहुत इच्छा रहैक। जकर अभिव्यक्ति ओ हाल धरि करैत रहैत छल हमरा लग। मुदा नाना ओकरा पढ़य नहि देलखिन जकर दुःख आइयो छैक ओकरा। से माय कुव्यवस्थाक तहत तेरहे सालमे बियाहि देल गेलीह आ पारिवारिक जिम्मेदारीक तहत भनसाघरमे चुल्हा तर झोंकि देल गेलीह। बीस-बीसटा जोन खटय खेतमे। पिता रहथि छोट-छीन जमींदार किसान। तकर जलखै-पनपियाइ असगरे बनबैत, बर्तन-बासन मँजैत, घर-अँगना नीपैत, कुटिया-पिसिया करैत मायक समय बीति जाइक कोना से ओकरो नहि पता चलैक।

मशीनक चलनसारि ताहि दिनमे कम रहय। सभटा काज हाथे आ पैरक माध्यमसँ होइत रहय। कुटिया आ पिसिया लधले रहय सभदिन। मोन नहि अछि तप्पत भात-तीमन खाकऽ सूती हम कहियो दुनू भाइ-बहिन। दिनक बनल खाकऽ सूति राति आ रतुका बनल खाइ भोरमे जलखै। माय-मैंयाँ नौ बजे राति धरि ढेकी पर कुटिया करैत रहैत छलीह। उपजा-बारी खूब होइक ताहि दिनमे। सए-सए मोन धान। तकर उसिनियाँ। तकरा फेर सुखेनाइ, फेर ओकर कुटिया। आसान बात नहि रहैक ओकरा सभक लेल। से माय कियैक ने गेल ई साहित्य, ई नाटक, ई कविता-कथा। एकर सुरक्षा, एकर छपाइ। तैयो जँ हमरासँ पूछब तऽ हम हृदय पर हाथ राखिकऽ कहि सकैत छी जे हमरा पढ़ेबाक प्रति मायकेँ बहुत लालसा रहैक। ओ चाहैत रहय जे हम कहुना पढ़ी, कारण ओ नहि पढ़ि सकल छल। सैह कारण रहल जे हमरा उमेरक अन्य छौड़ी जखन भानस-भातमे उलझल रहैत छल, हम स्कूल जाइ। पढ़ी-लिखी। लोक जँ टोक-टाक करय तऽ ओ कहय— ''काज करैक लेल तऽ जीवन पड़ल छैक। एखन पढ़बाक समय छैक, ई पहिने पढ़त।''

से हम पढ़लहुँ। किछु लिखबो केलहुँ। धरि अपन एकोटा नाटककेँ हम सुरक्षित नहि राखि सकलहुँ, तकर दुःख रहत हमरा आजीवन। एकोटा नाटकक पाण्डुलिपि धरि नहि अछि हमरा लग। कतय गेल? की भेल? किछु नहि मोन अछि हमरा। एतेक धरि मोन अछि जे एकटा टिनही पेटी रहय मैंयाँक दुरगमनियाँ, जकर उपयोग मैंयाँक गेलाक बाद हमहीं करैत रही

आ ओही पेटीमे हम रखने रही ओ पाँचो कॉपी जाहिमे नाटक लिखने रही। तकर बादसँ कालक्रमे सासुर-नैहर करैत, भनसाघर-सोइरी होइत ओ पाँचो नाटक कतय छुटि गेल, किछु नहि मोन अछि हमरा।

ओना आब एहि बातक की जे बीति गेल से बीति गेल। ओ तऽ नहि छपेलै, जँ छपाइये जइतैक तऽ कोन चमत्कार भऽ जइतैक! मैथिली साहित्यमे नाटकक कोनो अभाव छैक! हमरासँ बढ़िकऽ एक-पर-एक नाटककार-गद्यकार भेलाह अछि आ आगुओ हेताह। मैथिली साहित्यक प्रांगण एहिना देदीप्यमान रहत सभदिना। हँ, तहन मायक अपन संतानसँ बिछुड़ला पर जे संताप रहैत छैक से संताप तऽ अछिये आ रहबे करत। वर्तमानमे हम पद्येक माध्यमसँ अपन मुक्ति ताकि रहल छी। भविष्यक गर्तमे की छुपल अछि से हमरा नहि पता।

—कामिनी

काव्य-क्रम

13 : भूमिका
15 : नांगट लोक
17 : बिनु अँगनाक गामक घर
20 : भत्थन भेल इनार
22 : पल-पल छिजैत पोखरिक काया
27 : बगड़ा
30 : दुष्ट जीव कौआ
33 : मातृभाषा
35 : राम
37 : बालक राम
39 : सियावर राम
41 : निष्प्राण भेल प्राण
44 : ब्राह्मण आ डोम
47 : रक्तबीजक संतान
49 : इतिहास आ वर्तमान
50 : दूरसंचार
52 : छाहरियो मँगैए छाहरि
54 : गलमा वाली
56 : सुख
58 : महाप्रसाद
60 : पिंजरे के पंछी रे तोरा दरद न...
62 : अन्नदाता
65 : विरासतमे बैंटवारा
67 : नेपथ्वसँ बाहर राधा-कृष्ण
70 : वस्त्रहीन सभ्यता
72 : मैथिली
74 : सरस्वती आ लक्ष्मी

77 : निर्वस्त्र भाषा
80 : बाबा
82 : विकासे वनत विनाशक कारण
84 : आगि
86 : पृथ्वी
88 : संघर्ष
91 : सुख आ दुःख
93 : अफवाह
95 : प्रायोजित
96 : अभिनव
98 : नेपथ्य
101 : जे जतेक धनीक से ततेक दरिद्र
104 : भेद
106 : अपना बढ़िकऽ भोज
109 : जल-हवा
112 : आस्था
114 : गाछसँ टूटल पात
116 : भिखमंगनी
118 : अछूत
120 : इच्छा-1
122 : इच्छा-2
125 : संतुलन
127 : स्वर्ग आ नर्क

.-

भूमिका

भूमिका बान्हिकऽ
ककरो किछु
कहइये नहि आयल
जकरा जे कहलहुँ
से जहिनाक तहिना
इहे कारण रहल
जीवनमे कहियो
ककरो प्रिय
नहि बनि पयलहुँ

नहि बनि पयलहुँ
ओ लोकप्रिय लोक
जे बाहर किछु आर
आ अंदर किछु आर रहैए
जे सोचैए से बाजय नहिये
जे करैए से लोककेँ
बुझय नहि दइये

सत्यक शृंगार करैक बेगरता
नहि बुझना गेल कहियो
आ नहि झूठकेँ
मुखौटा लगबैक आवश्यकता
जे जहिना अछि
तकरा तहिना
प्रस्तुत करैक क्षमता पर

हम विश्वास करैत छी

हम मनैत छी
बहुत जगह
आवश्यक होइत छैक
भूमिका बान्हब
सम्बन्धक डोर
तखने सरस बनल रहैत छैक
कखनो-कखनो तऽ भूमिका
सम्पूर्ण कार्य-व्यवहारक सार
सेहो रहैए

धरि भूमिकाहीन शब्दोक
अपन सौन्दर्य अछि
जाहिमे प्राकृतिक सुन्दरता
रहैत अछि शामिल
जे सभ कृत्रिमता पर
पड़ैए भारी।

नांगट लोक

नग्न लोकक तनेटा नहि
मोनो होइत अछि 'नग्न'
आ जखन
मोन होइत अछि 'नग्न'
तऽ संसारक सभ वस्त्र
पड़ि जाइत अछि कम
लोकक मानसिक नग्नता
झँपबामे

तनक नग्नता
देखा पड़ैत अछि
सामनेबला लोककेँ सहजहि
धरि मोनक नग्नता
देखा पड़ैत अछि
देरीसँ
कखनो-कखनो तऽ
एतेक देरी भऽ जाइत अछि
जे 'नग्न' लोक
भाषा, संस्कृति, सभ्यता
सभकेँ नांगट कऽकेँ छोड़ैत अछि

माय कहैत छलीह
एकटा फकरा
''नंगटे नहेता
गारता की''

आ ई नांगट लोक
दोसरोकेँ नांगट
करैसँ
हिचकिचाइत नहि अछि

कही जे नग्नता
ओकर धमनीमे
रक्त बनि
बहैत अछि
एहेन प्रवृतिक लोक
नांगट होयब
आ नांगट करबकेँ
अपन धर्म आ कर्म
दुनू मानैत अछि।

बिनु अँगनाक गामक घर

शहरक घरमे तऽ अँगना
कहियोसँ नहि छल
घर पड़बेक खोप जकाँ
बान्हल-छेकल
सूर्यक किरण
आ हवा जँ अबैत अछि
तऽ भागमंत बुझू अपनाकेँ

धरि बिनु अँगनाक घर
नहि छल पहिने गाममे
घर छोट हो कि पैघ
अँगना धरि होइत छल जरूरी
सभक घरक बीचमे
बिनु अँगनाक घरक कल्पनो
नहि कयल जा सकैत छल गाममे
एना कही जे अँगना
घरक प्राणवायु होइत छल गाममे

माघ-पूसक दुपहरिया
आ जेठ-बैशाखक साँझ
अँगनेमे सुखाइत छल
धान-गहुँम-मरुआ
तीसी-खेसारीसँ लऽकेँ
नाना तरहक अचार-पापड़
कुम्हरौरी-अदौड़ी-चरौरी

अँगनेमे खेलने छी हम सभ
कएक बेर जटा-जटिन
सामा-चकेबा, ती-ती, सतघरिया
अँगनेमे सुनने छी
कएक बेर ''बा''क मुँहे
सोनमा दैतक कथा
अँगनेमे सजैत छल
चौठी चानक डाली

अँगनेमे बैसैत छल
रंग-बिरहा फेरीबलासँ लऽकेँ
धनी-मिरचाइ-हरदिबला व्यापारी
आ ''बा'' मोल-भाव करैत
मिरचाइयो चखिकऽ कीनैत छलखिन
करू छैक कि नहि
ठठेरीबला अँगनेमे बैसि
नवका बरतन बेचैत छल
पुरना खरीदैत छल

से बहुउपयोगी गामक अँगना
आब अँगना नहि रहल
ओ घरमे बदलि गेल
बड़का काका, छोटका काका
बड़का भैया, छोटका भैयाक बीच
बँटाइत-बँटाइत
आब हाथक लकीर सन
ओझरायल-पोझरायल
बुझाइत अछि
गामक सम्पूर्ण व्यवस्था

जतय सौभाग्येसँ
खिड़की जोग जगह
छुटैत छैक दू घरक बीच
आ जँ खिड़की छुटियो गेल
तऽ हवा-बसात, शीत-रौद
प्रवेश करत कि नहि
तकर कोनो गारंटी नहि

स्थिति तऽ आब एहेन विकट अछि
जँ काल्हि छोटकी काकी
आ लाल काका
स्वर्गवासियो भऽ जेताह
तऽ एकादशा-द्वादशाक कर्म
कतय हैत, कतय ढेरी-कूरी लागत
पाँचटा पंचो कतय हाथ धोताह!

भत्थन भेल इनार

कहियो बाबा
पँचकठबा खेत बेचि
खुनेने रहथि इनार
जकरा बनबैमे माथक घाम
एँड़ी देने चूबल रहनि
महिनो धरि
जन-मजदूरक रोटी
बनबैत-बनबैत मैंयाँ
चूल्हा तर सीझ गेल रहथि
जेठ-बैशाखक गर्मीमे
घरक तीन दिस अन्न
खर्च भऽ गेल रहय
बोइनि जोखैत-जोखैत

तहन जाकऽ
बनल रहय इनार
छूटल रहय
पतालसँ पानि धरतीक लेल
आ जहन पहिल बेर
निकलल रहय पानि तऽ
बाल्टीन भरि पानिमे
किलो भरि चीनी
आ कागजी नेबो गारि
बनायल गेल रहय शरबत
आ तृप्त भेल रहय
पानि लेल पियासल

लोकक आत्मा

जे इनार टोल भरिक
प्यास मेटबैत छल
सभक झाँपन दैत छल
से बाबाकेँ परोछ होइतहि
भत्थन कऽ देल गेल
काका सभक हाथेँ
आब पानि कलसँ अबैत छैक
नलसँ अबैत छैक
इनारक ककरो बेगरते नहि रहलैक
तेँ देखभाल के कहय
जे सामान्यो ढंगसँ
इनारक उपस्थिति
खटकय लगलनि हुनका सभकेँ
आ दू-चारि धूर जमीनक वास्ते
उपरौंझ करय लगलाह
अपना-अपनीकेँ

हम मनैत छी
इनारक बेगरता
नहि रहलनि आब
हुनका सभकेँ
धरि बाबाक धरोहर मानि
जँ इनारोकेँ सुरक्षित
राखि लेने रहितथि काका सभ
तऽ बाबाक आत्मा
जुड़ाइत रहितनि
जतय कतहु रहितथि
लोकमे कि परलोकमे!

पल-पल छिजैत पोखरिक काया

पहिने हमरा गाममे
सात टा पोखरि रहय
सातो टोलमे
आ सातो जगजियान
दिन-प्रतिदिनक
नित्य-क्रियासँ लऽ कऽ
जीवन मरणक सभ कर्मकाण्ड
पोखरियेक घाट पर हुअ
पोखरियेक घाट पर
गाम भरिक आइ-माइ बैसि
गाम भरिक बुहरियाक
निंदा-प्रशंसा बाजथि
फल्लाँक पुतोहु कुलच्छनी
तऽ फल्लाँक सासु भगमंती

पोखरियेक पानिमे
पाथल जाय वंशी
जाहिमे कखनो
भुन्ना-बुआरी
तऽ कखनो इचना-पोठी बाझय
पोखरियेक पानिसँ
माय बनाबथि भात-दालि
जकरा अनबा लेल
घैलची पर दू टा घैला रहय
बारहो मास
आ दू कट्ठा पानि भाड़ा खेत पर

बुचनी रहय बान्हल
साओन-भदबारिमे
कएक बेर
बुचनीक पैर
पिछड़ि जाय
आ घैला बुचनीक काँख तरसँ
छिहुलीकऽ फुटि जाय
एको कर्म नहि
बाँकी रखथिन मैंयाँ बुचनीक
कहथिन– ''एकर देह नहि लबै छैक एकोरत्ती
नवे-नवे घैलाकेँ
फोड़िकऽ झुटका
बना दैत अछि''
डरे एकदम बुचनी
किछु नहि बाजय
मूड़ी झुकेने ठाढ़ रहय
आ सुनय मैंयाँक
सभटा फज्झति
ताहि दिनमे
सेर भरि धानमे
एकटा घैला दैक
आ सेर भरि धान उपजेबा लेल
करय पड़ैक लोककेँ
बड़ मेहनति

पोखरियेक घाट पर
टोल भरिक छौड़ी
माँजय साँझकेँ
बरतन-बासन
आ पोखरियमे पैसिकऽ

नहाय 'चुभुकि-चुभुकि'
एक बेर तऽ
पोखरिमे हम
डुमिये गेल रही
पुनितियाकेँ बँचबैत-बँचबैत
ओ तऽ धनि कलेबर दाय
जे हाथ पकड़ि बाहर खिंचलथि
नहि तऽ आइ तक
नामो-पता मेटा गेल रहितय हमर
आ ओहिये दिन
हम तय कऽ लेने रही
बिना हेलनाइ सिखने
नहि रहब आब
आ केराक थम्हक सहारे
जेना-तेना हेलनाइ
हम सिखने रही
आ जखन भऽ गेल रही
हेलबामे निपुन
तऽ पहिल बेर छूने रही
पोखरिक जाठि
बजरंगवलीकेँ सवा रुपैयाक
बताशा चढ़ाकऽ

एखनो हमरा गाममे
सातो पोखरि अछि जीबैत
मुदा चिंताक बात ई
जे पल-पल छीजि रहल छैक
पोखरिक काया
एके-दूटा पोखरि अछि
अर्ध स्वस्थ

जाहिमे स्नान-ध्यान
कयल जा सकैत अछि
पाबनि-तिहारक पैत-परम
राखल जा सकैत अछि
कुमरम-दनोही लेल
कोनियासँ पानि
भरल जा सकैत अछि
पितरक कर्म
ओकरा घाट पर
ओकर पानिसँ
कयल जा सकैत अछि
बाँकी पोखरिक पानि
या तऽ केचलीसँ
आच्छादित अछि
या सुखबाक कगार पर
सरकार पर सरकार बदलैत अछि
योजना-परियोजना बनैत अछि
धरि तैयो नहि बदलैत अछि
हमरा गामक पोखरिक काया

कहियो एही पोखरिकेँ
गंगा मानि
कार्तिक नहाइत रही
देव-पितर पुजैत रही
आ आँचर पसारि
आंग-समांगमे
देव-पितरक संग-साथ मँगैत रही

आइ एकेटा इच्छा अछि शेष
सरकार भलेहि ककरो होउन

बदलि जाय हमरा गामक
पोखरिक काया
गंगाक निर्मल धार सन होउ
एकर पानि
आ काशीक घाट सन होउ
एकर घाट
दूरसंचारक
एहि क्रांति कालमे
पुनः स्थापित होउ
मनुखसँ मनुखक संवाद।

बगड़ा

एगो समय छल
जखन धानसँ
भरल रहैत छल खरिहान
एगो समय छल
जखन पथारक पथार
सुखाइत छल धान
एगो समय छल
जखन हेंजक हेंज बगड़ासँ
चहचहाइत रहैत छल
खरिहान आ धान
आ बगड़ाक बीच
धानक बोझ पर बैसल
देखैत रहैत छलहुँ
धान सोहि-सोहि खाइत
बगड़ाक हेंजकेँ

की मजाल जे एको गो धान
छुटैत हुअ
एको गो खुद्दी छुटैत हुअ
एम्हर धान दू फाँक होइत छल
ओम्हर जाइत छल
बगड़ाक पेटमे
कएक बेर तऽ मैंयाँ
बगड़ासँ परेशान भऽ
बैसा दैत छलीह
बगड़ाक रखबारी करय

पथार लागल
धानक कातहिमे
आ हुड़-हुड़ कऽ
उड़बय पड़ैत छल बगड़ा
नहि तऽ आधा धान तऽ
पथारहिमे भूसा भऽ जाइत छल

ताहि दिनमे
चिड़ै आ मनुखक बीच
जनसंख्या लगभग-लगभग
समानुपात छल
एक-दोसरा पर निर्भरता छल
एक-दोसरा लेल प्रेमो छल
एक-दोसराक संरक्षणो छल
तेँ प्रकृति आ मनुखक बीच
सामंजस्यो छल बाँचल

जे मनुखक घर होइत छल
वैह चिड़ै-चुनमुनीक
आश्रय स्थल सेहो
ओहिये अँगनामे
चिड़ै फुदकैत छल
ओहिये घरमे
अपन घर बनबैत छल
ओहिये ओलती-दुआरि पर
ओकर बाल-बच्चा
खेलैत-धुपैत छलै
ओहिये परिवेशमे
पलि-बढ़ि
ओहो अपना लेल

अपन परिवार बसबैत छलै

आब नहि खरिहान अछि
नहि पथारक पथार धान
आ नहि बगड़ाक हेंज
आब पजेबाक मकान अछि
जे बँटाइत-बँटाइत
एतेक छोट भऽ गेल
की अँगनो घरेमे
विलीन भऽ गेल
सूर्यक प्रवेश
जतय कठिन छनि
ओतय चिड़ै-चुनमुनी
कोना अपन पैर पसारत
पाँखि फड़फड़ाओत
अपना लेल
दाना-पानिक
व्यवस्था करत
अपन परिवार बसाओत

आब मनुख
भारी पड़ि रहल अछि
सम्पूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था पर
जतय विकासक नाम पर
ठाढ़ कयल जा रहल अछि
ईंटा-पाथरक मकान
आ कंक्रीटक जंगलमे
हेरा रहल अछि
बगड़ा-मैना
कौआ-कोइली
कचबचिया आ सुग्गा!

दुष्ट जीव कौआ

पक्षीमे कौआ
बड़ दुष्ट जीव होइए
ई हमर अनुमान नहि
आँखिक देखल बात कहैत छी
आइ महिना दिनसँ पड़बा
सोइरी सेवने अछि
दूगो कि चारिगो
जे किछु अंडा देने हुअ
तकरा अपना पाँखिसँ
झँपने अछि
ओकर समुचित देख-रेख
करैत अछि
ठीक हमरा भनसाघरक
सामनेबला घरक खिड़की पर
जकरा ई दुष्ट जीव कौआ
बेर-बेर आक्रांत कऽ
ओकरासँ ओकर अंडा
ओकर बच्चा
छीनय चाहैत अछि
अपन आहार बनबय चाहैत अछि

पड़बा सतर्क अछि
सजग अछि
प्रतिरक्षामे सक्षम अछि
तेँ एखन धरि
बाँचल छैक

ओकर अंडा
ओकर बच्चा
मुदा कौआ
एही ताकमे रहैए हर घड़ी
जे कखन पड़बा उड़त
आ हम ओकर
घर-परिवार उजाड़ि देब
बाल-बच्चाकेँ
अपन ग्रास बना लेब
भूख बहुतो जीवकेँ
लागल रहैत छैक
मुदा सभ जीव
कौआ सन
दुष्ट नहि होइए
किछु जीवक हृदय तऽ
ममतामयी माइये सन
सुकोमल होइत छैक
जे दोसरोक बच्चाकेँ
अपने बच्चा सन बुझैए
ओहने स्नेह-प्रेम दइए

ओना माय तऽ
कौआ सेहो बनिते अछि
बच्चा तऽ ओहो
जनैत अछि
तखने ने चलैत छैक
ओकर वंश
बनल छैक निरंतरता
पीढ़ी-दर-पीढ़ीक

मुदा देहसँ माय
भलेहि बनि जाइत हुअ ओ
व्यवहारसँ ओ रहैए
एकदम दुष्ट
क्रूर-कठोरे
जे अपना संतानकेँ
संरक्षण दइए
आ दोसरक संतानकेँ
भक्षण करैए।

मातृभाषा

मातृभाषा मतलब
मायक भाषा
पितियानिक भाषा
मैंयाँक भाषा
जकरा पढ़बाक लेल
जकरा सिखबाक लेल
जकरा बजबाक लेल
कोनो स्कूलक बेगरता
नहि पड़ैत अछि
कोनो कॉलेजक आवश्यकता
नहि पड़ैत अछि
कोनो यूनिवर्सिटीक दौड़
नहि लगबऽ पड़ैत अछि

मातृभाषा चाहे
मैथिली हुअ
चाहे बंगाली
चाहे पंजाबी
ओ पीढ़ी-दर-पीढ़ी
हस्तांतरित होइत
जाइत अछि सहजहि
कोनो पैतृक
सम्पति जकाँ
अपने आप
आ ई तामे धरि
सुरक्षित रहैत अछि

जामे धरि
सुव्यवस्थित आ सुदृढ़
इच्छा-शक्ति
बाँचल रहैत अछि
मनुखमे।

राम

रामः गच्छति
रामः पठति
रामः हँसति
एहेन तरहक
बहुतो छोट-पैघ वाक्य
संस्कृतमे पढ़ने रही

राम जा रहा है
राम पढ़ रहा है
राम हँस रहा है
एहेन तरहक
बहुतो छोट-पैघ वाक्य
हिन्दीमे पढ़ने रही

मैथिली स्कूलमे
पढ़ाइये नहि होइत छल
तेँ घरेमे पढ़ने रही
अनपढ़ मैंयाँ
अनपढ़ माय
अनपढ़ काकी-काकासँ
सीताक राम
गीताक राम
पुनीताक राम
हमर राम
अहाँक राम
फल्लाँक राम

चिल्लाँक राम
घरे-घर रामहि राम

सुतैत राम
उठैत राम
भोरमे राम
साँझमे राम
शुभमे राम
अशुभमे राम
दुःखमे राम
सुखमे राम
जतय देखू
रामहि राम

राम मतलब
हमर राम
राम मतलब
अहाँक राम
राम मतलब
हमरा सभक राम

राम मतलब
मात्र दशरथक राम नहि
नहि कौशल्याक राम
नहि जनक
नहि जानकीक राम
राम मतलब
जन-जनक राम।

बालक राम

एगो बात कहैत छी
एकरा अन्यथा नहि लेब
अहाँ सभ
ई जे बालक राम छथि ने
हुनका हमरा पूजा करैक
मोन नहि करैए
आ नहि मंदिरमे
स्थापित कऽ
दूरेसँ प्रणाम करैक इच्छा

हमरा तऽ मोन करैए
एहि बालक रामकेँ
अपना कोरामे उठा ली
हृदयसँ लगा ली
आ दुलार-मलार करैत
कनी माथ सहला दी
कनी गालमे चुम्मा लऽ ली
कनी तेल-फुलेलसँ
मालिश कऽ दी
आ उतारि दी
दिन भरिक थकान
जेना अपना नेना सभक
उतारैत छलहुँ
मालिश कऽकेँ

हमरा तऽ इहो मोन करैए

कटोरीमे दूध-रोटी गुड़िकेँ
खुआबी हम अपनहि हाथसँ
आ अपन आँचरसँ
मुँह पोछैत कही– ''जो आब खेल गऽ''
''धरि ओरियाकेँ खेलिहेँ
कतहु कोनो अंगमे
चोट नहि लागहु''

ई कहयमे
हमरा कोनो संकोच
नहि बुझना जाइत अछि

एहि बालक रामकेँ
देखला उपरान्त
हमरा हृदयमे
भक्ति-भाव नहि
मातृत्व-भाव जगैत अछि।

सियावर राम

एतय हम
जाहि रामक चर्चा
करय जा रहल छी
ओ नहि दशरथक राम छथि
नहि कौशल्या
नहि सुमित्रा
नहि कैकयीक
ओ नहि अयोध्याक राम छथि
नहि मिथिला
नहि भारतक
कोनो भू-भागक राम

ओ राम
नहि साधु-संन्यासीक राम छथि
नहि कोनो अनन्य गृहस्थक राम
नहि हमर राम
नहि अहाँक राम
ओ चर-अचर
कोनो अन्यो जीवक राम नहि
नहि जन्मदाता राम
नहि पालनकर्ता राम
नहि संहारकर्ता राम
सृष्टिक सभ बन्धन
सभ चिन्तासँ
मुक्त राम

जकर चर्चा हम कऽ रहल छी
ओ सियावर राम छथि
शुद्ध सात्विक प्रेमसँ ओतप्रोत
अद्वितीय, अवर्णनीय, अलौकिक राम
जे सियाक अस्तित्वमे
अपन अस्तित्वकेँ
एहि तरहें समाहित कऽ लेलनि
जे लोक रामसँ पहिनहि
लैत अछि सीताक नाम
सियावर राम
एतय राम आ सीता
दू जीव नहि
एक जान बनल
बहि रहल छथि
नदीक धारा जकाँ
जकरा लोक जतेक बेर
अलग करबाक प्रयास करैत अछि
ओ ओतेक लग
ओतेक लग
आबि जाइत छथि
पुनः-पुनः।

निष्प्राण भेल प्राण

पहिने कलम-गाछीमे
गाछ बहुत रहय
आमक गाछ
कटहरक गाछ
जामुक गाछ
सिसोक गाछ
हर तरहक
आ हर प्रजातिक गाछ

बाबा बड़ लगनसँ
लगौने रहथि
रंग-बिरहा गाछ
जकरा ओ अपने
फड़ैत-फुलाइत तऽ
नहि देखि सकलाह
अकाल मृत्युक
कालक गालमे समा गेलाह
धरि पिता
बाबाक धरोहरिकेँ
संरक्षित करबामे
एकोटा कोर-कसरि
नहि रखलाह बाँकी

परिणाम स्वरूप
लतरय-चतरय लागल
गाछ-बिरीछ

कलम-गाछीमे
सघन छाहरि तऽ एतेक
जे जेठो-वैशाखक
लहलाइत सूर्यक ताप
धरती धरि पहुँचब कठिन

थाकल-ठेहियायल
लोक कतहुसँ अबैत छल
ओहि गाछ तर सुस्ताइत छल
पिता जामे जीलाह
ओहि गाछक जड़िमे
कटैत रहलनि हुनक
गर्मी भरिक दुपहरिया
ताहि दिन गाममे
नहि पक्का मकान छल
नहि बिजली, नहि पंखा

आब पिता नहि छथि
देखभालक अभावमे
गाछो-बिरीछ
निष्प्राण भऽ गेल
जाहिमे कहियो
प्राण बसैत छलनि
बाबा आ पिताकेँ

आब परती पड़ल जमीन अछि
जकर मालिक
बसैत अछि परदेश
जीवन-यापन लेल
करैत अछि चाकरी

ओ चाहियोकऽ
नहि गाम सम्हारि पबैत छथि
नहि कलम-गाछी
ओ शहर आ गामक
द्वंद्वमे फँसल छथि
ककरा पकड़ता
ककरा छोड़ता!

ब्राह्मण आ डोम

बात किछुए दिन
पहिलुका छी
जखन हम जाइत रही
पटनासँ गाम
यज्ञमे सहभागिताक लेल
लोहना रोडसँ
टेम्पूमे बैसि

हमरा गाम आ लोहनाक बीच
कएकटा गाम पड़ैत अछि
लगमा, कथवार, ककोढ़ा
मछैता, ललापट्टी, आदि-आदि
लगमा आ ककोढ़ाक बीच
पड़ैत अछि कथवार
आ कथवारेसँ सटल अछि
पाँच-दसटा डोमक घर
(जाति-पातिकेँ बढ़ाबा देब
हमर कोनो उद्देश्य नहि)
जे बीयनि बुनैत
कोनियाँ-सूप बनबैत
उपनयन-विवाहक चंगेरा-डाला बना
आ ओकरा बेचि-बेचि
करैत अछि
अपन जीवन निर्वाह
जकरा लग
पैतृक संपत्तिक नाम पर

मात्र एखनो फुसियेक घर अछि
बाँस कटबा आ छिलबा लेल
कत्ता-टेंगारी
जकर धिया-पुता एखनो
परंपरगत पेशामे फँसि
पिछड़ल अछि
आर्थिक रूपें

से कथवार लग
जखन टेम्पू आयल
तऽ एकटा पुरुष
ओहि टेम्पू पर बैसि गेलाह
हमरा बगलेमे
नहि चाहितहुँ हमर मोन
ऊपर-नीचाँ करय लागल
कारण जे पुरुष
बगलमे आबि विराजित भेलाह
हुनका देखने रही
डोमाक बगलमे बैसल
तेँ ई निश्चित छल
जे ओहो डोमे होयत
आ हमरा समाजमे
एखनो डोम
अछूत मानल जाइत अछि
आ जे डोमसँ छुआयत
ओ डोमक सिवा
आर की भ' सकैत अछि

हम आधुनिक
पढ़क-लिखल स्त्री

साहित्यसँ सेहो
सरोकार राखयवाली
भेलाक बादो
एहि द्वंद्वसँ बाहर
नहि उठि सकलहुँ
की हम ब्राह्मणक बेटी छी
हम ब्राह्मणक पत्नी छी
हम ब्राह्मणक माय छी

हमर अन्तर्मन
एहि बातकेँ
नहि नकारि सकल
जे जन्मजात हमरा धमनीमे
रक्त बनि बहैत अछि
की तू ब्राह्मण कुलमे जन्म लेलें
जातिगत रूपें तू पैघ छें

हमरा माफ करब
हमर लेखनी भलेहिं जाति-पातिसँ
ऊपर उठि गेल हो
हमर आत्मा जनैत अछि
हम एखनो
जातिये-पातिमे
लेपटायल छी।

रक्तबीजक संतान

रावण कहियो नहि मरत
ओ रक्तबीजक संतान छी
एकटा मरत
दोसर जन्म लेत
दोसर मरत
तेसर जन्म लेत
ई क्रम बनले रहत
कहियो नहि समाप्त होयत
ओकर वंशावली
निरंतर पलैत-बढ़ैत रहत ओहिना
जहिना एखन पलैत-बढ़ैत अछि

एहिना हत्या
बलात्कार करैत
लूट-पाट मचबैत
''एकोहं द्वितीयो नास्ति''कक
प्रभुत्व स्थापित करैत
गामसँ शहर धरि
बाजारसँ गली धरि
ओ बढ़ैत जायत
त्राहि-त्राहि मचबैत जायत

अहाँ प्रसन्न नहि होउ
एकटा रावणक वधोपरांत
रावण कएकटा अछि बाँचल
जे घात लगेने ठाढ़ अछि

कखन कोन घड़ी
कोन कांड कऽ देत
ककर गरदनि मोचड़ि देत
कियो नहि जनैए
रावण जन्मे लैत अछि
परपीड़ा परित्रास लेल
वैह ओकर कर्म आ धर्म
दुनू छी
जँ अहाँ
सुरक्षित रहय चाहैत छी
सतर्क रहू
सजग रहू
आँखि आ कान
दुनू खोलने रहू
नहि करू
अनजान आ अनचिन्हार
लोक पर विश्वास
कारण राम तऽ
बेर-बेर नहि जन्म लैत अछि
रावण तऽ जनमिते रहैत अछि।

इतिहास आ वर्तमान

इतिहास जँ कतबो गौरवशाली रहत
तऽ विपन्न वर्तमानक पेट
नहि भरि सकत
वर्तमानकेँ संवारबाक लेल
विपन्नतासँ मुक्ति
दियेबाक लेल
वर्तमानकेँ स्वयं
सक्षम होमय पड़त
अपना पैर पर ठाढ़ हुअ पड़त
इतिहासक गौरवगाथा
तखनहि नीक लागत
जखन वर्तमान
सभ तरहें इतिहासकेँ
संरक्षण-संवर्धन
देबामे सक्षम हो

विपन्नावस्था अपना आपमे
अभिशाप होइत अछि
कोनो परिस्थितिमे
ओतय देश-काल आ पात्र
महत्व नहि रखैत अछि
महत्व रखैत अछि परिस्थिति
जे देश काल आ पात्रकेँ
अपन चुरुकमे भरि
पीवा पर उतारू रहैत अछि
हर घड़ी, हर स्थितिमे।

दूरसंचार

मोबाइलमे पड़ल
हमरासँ बिछुड़ल
अपन सखा-संबंधी
अपन प्रिय लोकक नंबर
जिनका कहियो पुनः
फोन करब
जीवनमे नहि संभव
ताहि नंबरकेँ
देखि-देखि
एकेटा बात
अबैए मोनमे
जँ दूरसंचारक
कोनो ने कोनो सुविधा
रहितय ऊपर
तऽ लोकसँ लोक
बात करितय
ओतहुका हाल-चाल पुछितय
पता करितय
ओतहुका मौसमक मादे
आ कहितय
ठीकसँ रहब
समय पर भोजन करब
दवाइ-दौरी खायब
डॉक्टरसँ देखायब
आ हँ, फोन केनाइ

नहि बिसरब
चिंता लागल रहैए
अहीं पर
असगर जे छी ओतय

विज्ञान बहुत विकास कयलक
काश जे एकटा तार
जीवन आ मृत्युक बीच
जोड़ि सकितय
तऽ लोकसँ लोक
दूर भइयोकऽ
दूर नहि होइतय
एक-दोसराक
स्नेह-प्रेम लेल
एना नहि तड़पितय!

छाहरियो मँगैए छाहरि

मैंयाँ कहथिन सभ बेर
एहने जेठक दुपहरियामे
''है कनियाँ, आइ जतेक गर्मी छैक
ततेक कहियो नहि''
आ ई एक दिनक नहि
सभ दिनक बात रहैत छल
जामे धरि सूर्य
जरिकऽ उगैत रहैत छलाह
एहिना जहिना एखन उगैत छथि

मैंयाँ तऽ आब नहि छथि
मैंयाँक जगह पर
आब हम छी
आ हमरो सभ दिन
सैह लगैए
आइ जतेक गर्मी छैक
ततेक कहियो नहि
एक दिन बीतैत अछि
तऽ लगैए साल बीति गेल
जरल-धीपल सूर्य
लगैए दगनीसँ
दगैत रहैए
सर्वांग शरीरकेँ
आ दयनीय स्थितिमे
पड़ल रहैत छी हम

निरूपाय भेल

ई दयनीय स्थिति
हमरे टा नहि
हमरा सन-सन
लाखो आम अवामक अछि
जकरा भरि पेट अन्न
आ देह भरि वस्त्र
भेटि जाइत छैक
तऽ अपनाकेँ
सुखी मानैत अछि
आधुनिक सुख-सुविधाक नाम पर
जकरा लग अँगुरी पर गानय जोग
कोनो साधन नहि अछि
ओना गर्मीमे
गर्मी नहि लागौ
सर्दीमे सर्दी
तऽ समय-चक्र की कहौतैक

समय तऽ एहिना चलैए
अपना गतिये
मुदा मोन
मानै लेल
तैयार कहाँ होइत अछि तैयो
ओ तऽ एहि आतप
जेठक दुपहरिया देखि सोचैए
छाहरियो मँगैए छाहरि
मनुख तऽ मनुखे छी।

गलमा वाली

जरिकऽ खकसियाह भेल
एहि दग्ध वातावरणमे
गलमा वाली सुतल छथि
बर्फक सिल्लीमे लपेटल
शांत आ शीतल भेल
आब ने हुनका
ककरोसँ मोह छनि
नहि विछोहक दुःख
निर्विकार भेल
पड़ल छनि देह
साकारमे निराकार भेल
आत्मा कत छनि
ककरो नहि पता

जामे जीबैत छलीह
भरि पेट अन्न लेल
लोटा भरि पानि लेल
तरसैते रहलनि मोन
ई हालेक तऽ गप्प छी
जखन गेल रही गाम
तऽ कानि-कानिकऽ कहने रहथि
अपन दुःखनामा
अपन बाल-बच्चाक हाल
अपना प्रति होइत दुर्व्यवहार
आ सुनिकऽ हम

बढ़ि गेल रही आगाँ
आब तकर पछतावा होइए
दाइ किछु कऽ नहि सकलियै हम
गलमा वालीक लेल
दान-दक्षिणामे
हजार-पाँच सए
ओहिना चढ़ा अबैत छी कतहु
दुःखित परित्रासित लोक लेल
जँ सएओ-दू सएओ
नहि खर्च कयलहुँ
तऽ ई केहन धर्म-पुण्यक बात भेल

सैह गलमा वाली
काल्हि मरि गेलीह
कनैत-कलपैत
दुःख भोग करैत
बेटा-बेटी, नाति-नातिनक अछैते
फोन कयने रहनि बाल-बच्चा सभ
जामे हम नहि आबी
लहास नहि उठय अँगनासँ
बेटा जामे मुखग्नि नहि देतनि
मुक्त कोना हेतनि हुनक आत्मा
लोकवेद तऽ सैह कहैए
आब गलमा वाली
जीवितो तऽ नहि ने छथि
जे एहि बातक खंडनो करतीह
जे जीबैत नुआ ने भात
मुइने सर्वे-सराध!

सुख

हकासल-पियासल
आयल रहय नुनू
अमारहीसँ
जेठक प्रचंड रौदमे
(ज्ञातव्य हुअ जे अमारही
समाजक पीड़ित-वंचितक बस्ती छी)
माय ओकरा ओसारा पर बैसबैत
हमरा कहलक—''कामिनी नुनूकेँ
एक कप चाह बनाकऽ दहीन
बड़ थाकल छैक ई।''

ओना तऽ नुनू
हमर परिवारक
कोनो सदस्य नहि
आ नहि दूरो-दराजक
कोनो सखा-सम्बन्धी
धरि नुनूक ओहदा
हमरा घरमे
परिवारक सदस्य आ संबंधीसँ
ऊपर अछि
कारण पिताकेँ रहितहुँ
आ पिताक परोछ भेलाक बादो
जमीन-जायदाद
घर-परिवारक सभ जिम्मेदारी
नुनू सम्हारने अछि
समाज द्वारा निर्धारित
निम्न जातिक होइतहुँ

अपन कर्मण्यता आ एकनिष्ठताक बलें
द्रव्य उच्च आसन पर बैसल अछि

हँ तऽ कहय जे लगलहुँ
एक कप चाहक मादे
से सैह भेल
हम एक कप चाह
अगबे दूधमे बना
ओहिमे इलायची मिला
नुनूक हाथमे दऽ देलियै
आ ताकय लगलहुँ
नुनूक मुँह
पता नहि
चाह केहेन बनल
नीक या खराब
तामे माय पुछिये देलखिन
—''रे नुनू चाह नीक बनलौ
बनेलकै हँ तऽ छौड़ी अगबे दूध मे''

नुनू चाहक चुस्की लैत बाजल
—''गिरहतनी! एहन चाह तऽ
हम अपना जीवनमे
कहियो नहि पीने रही
चाह ततेक नीक लागल''
ई सुनितहि छाती सूप सनक भेल
लागल वर्षो-वर्षसँ
जे चाह हम बनबैत अयलहुँ
से आइ सार्थक भेल
कखनो-कखनो
छोट-छोट काज
बड़ पैघ सुख दऽ जाइत छै।

महाप्रसाद

छप्पन भोग
बनि रहल अछि
महाप्रसाद लेल
एक-पर-एक
लुड़िगर भनसिया
मुस्तैद रहैत अछि
भोरसँ राति धरि
भनसाघरमे
चुल्हि लग
कोनो वस्तु-जातक
कमी नहि अछि
भरल अछि भंडार
रंग-बिरहा
खाद्य-पदार्थसँ

कोन-कोन मुँहे भगवान
की-की खयताह
से ओ अपनहुँ
असमंजसमे हेताह
भूखल लोकक तृष्णा
तऽ बुझल जा सकैए
धरि जकर पेट
पहिनेसँ भरल हो
ओ तऽ अगधायले खायत
कही जे

किछु खायत
किछु दूरि करत

मुदा तैयो
शानमे सम्मान लेल
छप्पन भोगक थारी लऽ
जुटबे करताह भक्तगण
देवता खाथि
या उछिष्ट कऽ
छोड़ि देथि
कोनो अंतर नहि पड़त
भक्तक श्रद्धा आ विश्वासमे
महाप्रसाद लेल
हाथ-पर-हाथ
रहय चढ़ल
पहिने हमरा
तऽ पहिने हमरा

देवता! अनेरे नहि ने
देवता कहाइत छथि
अपन देवत्वक गरिमा
बरकरार रखबाक लेल
बहुतोकेँ पाँतीमे
पंक्तिबद्ध करेने रहैत छथि
अहर्निश अदौसँ
अपना चारूकात
अगल-बगलमे सेहो।

पिंजरे के पंछी रे तेरा दरद न जाने कोई

मिट्ठू! बंद अछि
दू बीतक पिंजरामे
एहि कात
ओहि कात करैत
कछमछाइत-छटपटाइत
पाँखि फड़फड़बैत
उड़ैक असफल प्रयास करैत

दू मंजिला मकानमे
बालकोनीक ग्रिलसँ
टाँगल छैक मिट्ठूक पिंजरा
जतयसँ देखाइत छैक
सम्पूर्णो आकाश
चान-सुरुज
सहस्रो-सहस्र तरेगन

हवा-बसात अबैत छैक
छुबिकऽ चलि जाइत छैक
मिट्ठू घुरियाइते रहि जाइए
ओहि बंद पिंजरामे

मिट्ठुओमे स्वतंत्रताक भाव छैक
ओहिना जहिना
एकटा मनुखमे होइत अछि
मिट्ठुओ तय करय चाहैत अछि

सम्पूर्ण आकाशक यात्रा
जहिना एकटा मनुख करय चाहैत अछि
मिट्ठुओ जीबय चाहैत अछि
अपन जीवन
अपना हिसाबे
मुदा मिट्ठू! स्वतंत्र नागरिकक
परतंत्र पालतु पक्षी छी
जे आँखिसँ आकाश
देखि तऽ सकैए
मुदा आकाशमे
उड़ि नहि सकैए!

अन्नदाता

पिता रहथि
बरहमसिया किसान
सालो भरि
किछु ने किछु
खेतमे करिते रहथि
आ सालो भरि
किछु ने किछु
उपजा-बारी
होइते रहय
कखनो धान तऽ कखनो गहुँम
कखनो दलिहन-तेलिहन
तऽ कखनो तीमन-तरकारी
बिनु किछु उपजेने
पिताकेँ चैने नहि आबनि

परिणाम घर तऽ अन्न-धनसँ
भरल रहय
धरि पिताक जीवनमे
कहियो एकोपलक पलखति
नहि आबनि
दिनसँ राति धरि
पिता जोतले रहथि
कोल्हुक बड़द सन
जिनका देखि-देखि
आत्मा कचोटय
हे! भगवान पिता कतेक काज
करैत छथि

हिनका जीवनमे
एको घड़ीक
चैन नहि छनि

मुदा पिताकेँ
कहियो नहि देखलहुँ
अपना स्थिति लेल
चिंता-फिकिर करैत
एहि जेठ-बैशाखमे
खेतक दराद सन
फाटि जाय पिताक पैरक एँड़ी
आ साओन-भदवारिमे
पानिमे रहैत-रहैत
सड़ि जाय पैरक चमड़ा
एहेन बात नहि होइत हैत
जे पिताकेँ
दर्द नहि होइत हेतनि
होइत हेतनि अवश्य
धरि दर्दकेँ
अपना जीवन पर
कहियो हावी
नहि होमय देलाह पिता

अपना घर-परिवार लेल
पिता तामे धरि खटैत छलाह
तैयो हमरा सभक जीवनमे
हुनका जीवनमे
ओ सुख-सुविधा
कहियो नहि आयल
जकर हकदार छलहुँ हमसभ
कखनो दाही

तऽ कखनो रौदी
मारिते-मोचारिते
रहैत छल सभ दिन
खेती-बारीकेँ
आ पिता
जकरा पाटबामे
आरो जी-जान लगा दैत छलाह

तैयो नीक स्कूल
आ नीक कपड़ा-लत्ता लेल
तरसैते रहैत छल
हमरा दुनू भाइ-बहिनीक मोन
एकटा सामान्यो नौकरीहाराक
घर-परिवारक
जे स्थिति रहैत अछि
ओहियोसँ निम्न
होइत अछि
सामान्य किसानक जीवन
ओकर बाल-बच्चाक हाल

अन्नदाताक अन्नसँ
सम्पन्न रहैत अछि
सम्पूर्णो देश
धरि विपन्न रहैत अछि
स्वयं अन्नदाताक
सम्पूर्ण परिवार
जे विकासक बादो
ओ विकास
नहि कऽ सकल
जकर ओकरा दरकार छैक!

विरासतमे बँटवारा

पिता आ पित्तीक बीच
जखन बँटवारा भेल रहनि तऽ
नेबालके रहथि गोनू
नहि बुझथिन ताहि दिनमे
एहि बँटवाराक अर्थ
होइनि काल्हि तक तऽ
माय आ पितियानि
एके ठाम भानस
करैत छलीह
आइ कियैक भऽ गेल चुल्हि अलग
हमरा आगू गहुँमक सोहारी
आ मनुआक आगू मरुआक रोटी
कियैक पड़ल अलग-अलग
हमरा भात पर
कटहरक तीमन
आ मनुआक भात पर
तीसीक झोर
कियैक बेदरंग अछि
से नहि कहि

कतेक दिन धरि
ई प्रश्न
गोनूक माथ मथैत रहलनि
जकर उत्तर हुनका
नहि मायसँ भेटलनि

नहि पिता आ नहि पित्तीसँ
धिया-पुता जानि
सभ टरकाबैत रहलनि
एम्हरसँ ओम्हर
कालक्रमे गोनू बिसरैत गेलाह
एहि सभ विषादकेँ

आब जखन कि
पिता आ पित्ती
नहि छनि जीबैत
फेरसँ दोहरायल जा रहल अछि
ओही बँटवाराक दृश्य
घर अलग
चुल्हि अलग
थारी अलग
रोटी अलग
दुख अलग
सुख अलग
अंतर एतबे अछि
एहि नाटकक नायक आ खलनायक
एहि बेर पिता आ पित्ती नहि
गोनू अपने छथि
आ गोनूक दुनू भाय छथिन
बीचमे माय
बीच घरक खाम्ह रहितहुँ
कोनटा परहक फरकी भेल छथिन
जकरा कियो घुसकाकऽ
एम्हर दैत छथिन
तऽ कियो घुसकाकऽ ओम्हर।

नेपथ्यसँ बाहर राधा-कृष्ण

यज्ञक आइ सातम दिन छी
तीन दिन आरो चलत यज्ञ
नौ राति आ दसम दिन पर
समाप्त होयत यज्ञ

देश भरिक श्रेष्ठ पंडित
बजाओल गेलाह अछि
यज्ञ सम्पन्न करेबाक लेल
वेदक मंत्रोच्चारसँ
गुंजित अछि दिग्-दिगंत

एहि पावन बेलाकेँ
आरो पावन करबाक लेल
सन्ध्यामे आयोजित
होइत अछि भागवत कथा
आ रातिमे रास लीला
जे वृंदावनक श्रेष्ठ रास मंडली
अभिनीत करैत अछि

जेहने नृत्य
तेहने संगीत
कही जे देखबा आ सुनबा घड़ीमे
लगैत अछि
एकहि जनममे
कएक-कएक जनमक सुख

भोगि रहल छी
छोट-छीन सुकोमल राधा
किशोरवय कृष्ण
जखन मयूर पंख लगा
रचबय लगैत छथि रासलीला
तऽ रोइयाँ-रोइयाँ भाव-विभोर
भऽ जाइत छैक लोकक
ओहि भाव-नृत्य पर
राधे-राधे, कृष्ण-कृष्णसँ
गुंजित होमय लगैत अछि
सम्पूर्णों परिसर

एतय तक तऽ ठीक अछि
धरि हृदय सालैत अछि तखन
जखन सम्पूर्ण साज-सज्जा
अभरण-पहिरण उतारि
राधा आ कृष्ण एकाकार भऽ
नेपथ्यसँ बाहर निकलैत छथि
पेंट आ गंजीमे
तऽ ओहि दस-बारह वर्षीय
नेनाकेँ देखि
चिंतासँ मोन
आकुल-व्याकुल
होमय लगैत अछि

आइसँ कतेको वर्ष पहिले
''स्कूल चलें हम''
सर्व शिक्षा अभियानक नारा
बच्चा-बच्चाक जुबान पर छल
बहुत हद तक ई सार्थको भेल

धरि तैयो कतहु ने कतहु
ई निरर्थक तऽ भेल अवश्य
नहि तऽ स्कूल चलबाक उमेरमे
राधा-कृष्ण कतहु मंच पर
मंचित होइथि
रोटीक बेगरता शांत करबाक लेल
गामे-गाम, शहरे-शहर
कतहु जाकेँ रास रचबथि
एखनो पेटक आगि
सभ विकास पर
पड़ि रहल अछि भारी
आ राधा-कृष्ण नाचि रहल छथि
जीवनक मंच पर बेरा-बेरी।

वस्त्रहीन सभ्यता

टेलीविजन पर
आबि रहल अछि
मिनटे-मिनटे
रंग-बिरहा वस्तु-जातक प्रचार
जकरा अप्सरा स्त्री
आ गंधर्व पुरुष
परचारि रहल अछि
मिनटे-मिनटे

प्रचार-प्रसार बिना
बाजार नहि चलै छैक
ई सोलह आना सत
धरि वस्त्रहीन
स्त्री आ पुरुष
प्रचार-प्रसारक नाम पर
सभ्यतोकेँ वस्त्रहीन करैत अछि

तेल-साबुन, शैम्पूसँ लऽ कऽ
अंतरंग वस्त्र धरि प्रचार
अर्धनग्न स्त्री
आ अर्धनग्न पुरुष
एना करैत अछि
की अपन सर-कुटुम्ब
अपन बाल-बच्चा संग
देखबा काल

लगैत छैक लोककेँ
बिन अपराधे
निर्वस्त्र भ' गेलहुँ हमहुँ

एकटा द्रौपदीक चीरहरणे
विनष्ट भ' गेल रहय कुरुवंश
छिड़ि गेल रहय
महाभारत सन
विनाशकारी युद्ध
आइ स्वतः लोक
निर्वस्त्र भऽ रहल अछि
ककरो कोनो
अंतरे नहि पड़ैत छैक!

मैथिली

मैंयाँ रहथि
एकदम अनपढ़
तैयो बाजथि मैथिली
नानीयो तऽ अनपढ़े रहथि
तैयो मैथिलीये बाजथि
मायकेँ इच्छा रहितहुँ पढ़वाक
नाना पढ़य नहि देलखिन
स्कूलसँ हँकैत कहलखिन–
''चल-चल घर
बेटाक पढ़नाइ तऽ बुझैत छी
दुनियाँदारी देखत
बेटी पढ़ीकऽ
की करत
आखिर चुल्हे-चेकी तऽ नीपत
घरे-अँगना तऽ सम्हारत''
तैयो माय मैथिलीये बजैत छलीह
हम बी.ए., एम.ए. पास
स्वाभाविक अछि
जे मैथिली बाजब
मैथिली पढ़ब

मैथिली हम
कियैक नहि बाजब
मैथिली हम
कियैक नहि लिखब
मैथिली हम

कियैक नहि पढ़ब
मैथिली हमर
भाषा मात्र नहि
हमरा धमनीमे बहैत
रक्तक ओ एक-एक बून्द छी
जाहि पर टिकल अछि
हमर जीवन
हमर अस्तित्व
हमर पहिचान
जँ मैथिली नहि
तऽ हम नहि
जँ हम नहि
तऽ मिथिला नहि
जँ मिथिला नहि
तऽ राम नहि
जँ राम नहि
तऽ अयोध्याक अस्तित्व केहेन
आ जँ अयोध्याक
अस्तित्व नहि
तऽ भारतक
इतिहास आ वर्तमान
ककरा पर पूर्ण
कथी लए गौरवान्वित!

सरस्वती आ लक्ष्मी

काल्हि गेल रही
विद्यापति समारोहमे
राजीव नगर
आमंत्रित जे रही
कवयित्री रूपमे
आ कवयित्री सम्मेलनक बीचेमे
एलाह नेताजी
बिना नेताक समारोह
सम्पन्न कहाँ होइत अछि कतहु
आयोजकोकेँ अपन मजबूरी छनि
सरस्वतीक आराधनामे
लक्ष्मीपूत नहि उपस्थित हेताह
तऽ फाइनांस कतयसँ हेतै
कोना हेतै
कियो अपन पेट काटिकऽ
तऽ काज नहि ने करत

से नेताजी जे एलाह
से तऽ एबे केलाह
धरि धैर्य नहि रहनि एतेक
जे पाँच मिनट बैसिकऽ
कवयित्री सम्मेलन समाप्त होयबाक
प्रतिक्षा करितथि
ठीके छैक
कोनो बात नहि
ओ कवि नहि छथि

जे एकटा कविता पाठ करबाक लेल
घंटो-घंटा बैसल रहताह
दस टा काज रहैत छनि
दस जगह जयबाक रहैत छनि
सभक मुँह धरबाक रहैत छनि
आइ ओ दोसरक भावनाक
ख्याल रखथिन
तखन ने काल्हि कियो
हुनको लेल सोचतनि
परस्पर हित साधनेसँ
काज चलै छैक कलयुगमे

से नेताजी बैसलाह
एक दिस
आ कवयित्री लोकनि बैसलीह
दोसर दिस
कवयित्रीयोक अपन मर्यादा छनि
एक बेर मंच पर चढ़लीह तऽ
बिना काज सम्पन्न भेने
मंच कोना छोड़ि सकैत छलीह
नेता रहथि कि उपनेता
मंत्री रहथि कि संतरी

से एहि हमर-तोहरक बीच
एकटा जे गरबड़ी भेल
से हाथसँ कलम
छिहुलिकऽ मंच पर खसि पड़ल
एहि एक घड़ीमे
बुझू जे सर्वांग शरीर
सिहरि उठल

ओ तऽ सतर्कता बरतलनि नीलू
की ककरो पैर तर
सरस्वतीकेँ जयबासँ पहिने
कलम हाथमे उठा लेलीह
नहि तऽ की होइतय
आ की हम करितहुँ
से अपनहुँ नहि बुझैत छलहुँ

मनैत छी
लक्ष्मी जँ कृपा नहि करथि
तऽ पेटमे पाँच कओर अन्न
नहि जायत
लक्ष्मी जँ कृपा नहि करथि
तऽ देह पर पाँच हाथ वस्त्रक
झाँपन नहि पड़त
लक्ष्मी जँ कृपा नहि करथि
तऽ सरस्वतीयोक शृंगार
नहि कऽ पायब
एकर मतलब ई नहि
जे सरस्वती
लक्ष्मीक पौदान बनल रहतीह
आ हम देखैत रहब
हम सरस्वती पुत्री छी
पहिने सरस्वती
तखने लक्ष्मी पूजब।

निर्वस्त्र भाषा

मनुख विकासक क्रममे
जखन भाषाक खोज कयने होयत
कही जे भाषाक मानक
तय कयने होयत
ओ सहज नहि रहल होयत
मनुखक लेल
मानक भाषाक महत्ता
मनुखक सभ्य होयबाक
पहिचान बनि गेल होयत
ताहि दिनमे
जहिया नहि ट्रेन बनल छल
नहि एरोप्लेन
कही जे मनुखक यात्रा
आइ-काल्हि जकाँ
सहज नहि रहल होयत
ताहि दिनमे

ओतय भाषा सन
विकासक महत्वपूर्ण कड़ीकेँ
मनुख एक-एक कऽ केँ
कोनाकऽ जोड़ने होयत
से तऽ वैह जनैत होयत
आ जखन मनुख लग
अपनहुँ देह निर्वस्त्र होयत
तखनहुँ ओ यैह प्रयास कयने होयत
जे भाषाक मर्यादा

बाँचल रहय
कही जे भाषा
निर्वस्त्र नहि रहय
कोनो स्थितिमे

आइ जखन कि मनुख लग
सभ किछु अछि
कही जे विकासक रफ्तार
एतेक तेज अछि
जे ग्रह-उपग्रहक दूरी
अपने ममहर सन लगैए
कोनो एहेन इच्छा-आकांक्षा
नहि अछि बाँचल
जकरा मनुख नहि पूरा कयने हुअ
लोक सपनो देखलक
आ से सपना साकारो भेल

एतेक भेलाक बादो
जखन सभ्य समाज
भाषाक मर्यादा
नहि राखि पबैत अछि
कहि जे भरल सभामे
द्रौपदीक चीर सन
निर्वस्त्र करबा पर
उतारू भऽ उठैत अछि
तऽ लगैए
हमरा सन दरिद्र असभ्य
आन कियो नहि
जे हजारो वर्षक
सभ्य मनुखक धातीकेँ

एहि तरहें बोहा रहल अछि
स्वार्थक सागरमे
मनुख विकास करैत-करैत
एहि तरहें
अपन सभ्यता-संस्कृतिकेँ
विनष्ट करत
ई आदियो मानव
नहि सोचने होयत
सपनहुँमे!

बाबा

पिता रहथि नेबालके
जखन हुनक पिता
हुनकासँ छीनि गेलनि
ताहि पिताक मुँहे
बाबाक विषयमे
किछु नहि सुनल
मैंयाँ लग पहाड़ सन
वैधव्यक जिनगी पड़ल रहनि
जाहिमे नैया आ खेबैया
दुनू अपने रहथि
तेँ हुनका पलखतिये नहि भेलनि
जे बाबाक मादे
किछु कहितथि
ओना पतिक नाम लेब
हुनका विषयमे
किछु नीक-बेजाय बाजब
कुलीन ब्राह्मण स्त्रीक लेल
ई बात शालीनतो नहि मानल
जाइत छल

तेँ बाबाक अर्थ आ महत्व
जहियासँ ज्ञान भेल
बाबेकेँ बुझलहुँ
बाबासँ तात्पर्य
हमरा सभक बाबा

सम्पूर्ण मिथिलाक बाबा
जे देश-काल आ परिस्थितिसँ
ततेक ने ऊपर
उठि गेलाह
जे सम्पूर्ण भारतक
बाबा भऽ गेलाह
आ बाबा एहेन
विशेष पदवी मिथिलामे
बीच घरक खाम्हकेँ
देल जाइत अछि
जकरा पर
सम्पूर्ण घरक अस्तित्व टिकल रहैए

ताहि बाबाकेँ
हमरा एहेन अदना कवयित्री
प्रणाम करबाक
लगमे ठाढ़ हेबाक
साहस करैए
ई कोनो छोट बात नहि भेल
हमरा सन सन लेल
मुदा हमहुँ
ओही मिथिलाक बेटी छी
जाहि मिथिलाक
ओ बेटा रहथि
आ मिथिलामे तऽ लोक
सूर्योकेँ दीप देखबैत अछि
तेहने सन धूप-दीप
आइ जरा रहल छी
बाबाकेँ भाव कुसुमांजलि
चढ़ा रहल छी।

विकासे बनत विनाशक कारण

दिनक एखन
बारहे बाजल अछि
तापमान बियालिस डिग्री
पार भऽ गेल अछि
मौसम विभागक
पूर्वानुमान अछि
पैंतालिसक ऊपर चढ़त तापमान
सूर्य आगिक गोला बनल
विचरण कऽ रहल अछि
सम्पूर्ण आकाशमे

त्राहि-त्राहि कऽ रहल अछि
जीव-जंतु सम्पूर्ण सृष्टि
मैना-मैनीक जोड़ा
भटकि रहल अछि
छाहरिक खोजमे
एम्हर-ओम्हर
धरि ओकरा छाहरि
नहि भेटि रहल छैक कतहु
गाछ सभ काटि-काटि
बना देल गेलै
पैघ-पैघ अपार्टमेन्ट
दू मंजिला, तीन मंजिला मकान
जाहिमे मनुख
अपने पिंजरा बन्द अछि
चिड़ै-चुनमुनी जकाँ

कखनो-कखनो तऽ लगैए
साँस रूकि जायत
दम घुटि जायत
एहि ईंटा-पाथर भरल परिवेशमे
जतय विकासक गर्भमे
अति उत्साहसँ
कयल जा रहल अछि
विनाशक बीजारोपण
आ देखबैक एक दिन
ई विकासे बनत
विनाशक कारण।

आगि

एकटा आगि
जोड़ल जाइत अछि
यज्ञाहुति लेल
जाहिसँ
मानव कल्याणक
आशा कयल जाइत अछि

दोसर आगि
जोड़ल जाइत अछि
पेटक आगि
मिझेबाक लेल
जाहि पर
आश्रित अछि
मानव जीवन

तेसर आगि
जोड़ल जाइत अछि
मनुखक विनाश लेल
जकर सूत्रधार
मनुखे बनैत अछि

आ ई आगि
उपर्युक्त दुनू आगि पर
पड़ैत अछि भारी
जकर लपेट
नहि जानि

कतेको घरकेँ
सुड्डाह कऽ दैत अछि
कतेको जनकेँ
अपना लपेटमे
लऽ लैत अछि

आ ई सुनियोजित आगि
मानव सभ्यता पर
कलंक बनल
चलि आबि रहल अछि
अदौसँ
जे मेटेने नहि मेटाइए
धोने नहि धुआइए!

पृथ्वी

पृथ्वी रसातलमे
धँसि जेतीह
से हम नहि कहैत छी
पृथ्वी पृथ्वीये पर
नर्कक भोग
भोगि रहल छथि
ताहिमे
कोनो दू मत नहि

जाहि दिन
विकासक क्रम
शुरू कयने हैत मनुख
भरि गेल हेतै
हर्षातिरेकसँ
पृथ्वीक खोइँछ
पारिजातकक फूलसँ
महमह कऽ उठल हैत
चारूभरक वातावरण
सुमन-वृष्टि
कयने हेताह देवतागण
ऋषि-मुनि
वाचन कयने हेताह
वेद-पुराण

वास्तवमे ओ दिन
ऐतिहासिक रहल होयत

जखनसँ मनुख
प्राकृतिकसँ आधुनिक दिस
प्रस्थान कयने हैत
जंगलसँ नगर दिस
उन्मुख भेल हैत
ई यात्रा
सहज तऽ नहि रहल हैत
मनुखक लेल
मुदा अबूहो आ अबूझो
नहि रहल हैत से हम जनैत छी

आइ यात्रा करैत-करैत मनुख
विकास होइत-होइत पृथ्वीक
स्थिति एतय पहुँचल अछि
की कोढ़ि-कुष्ठ सन
फुटि पड़ल अछि
विकासक गगनचुम्बी
अनन्त महल
पृथ्वीक छाती पर
आ पीज सन बहि रहल अछि
कल-कारखानाक
उच्छिष्ट दुर्गंध पानि
जे नदी-उपनदी
गंगा-यमुना सन
अनेको पवित्र नदीकेँ
अपवित्र तऽ करितहि अछि
जीव-जंतुक जीवन
सेहो खतरामे
द' रहल अछि।

संघर्ष

रामनवमीक पूर्व संध्या पर
चलि रहल अछि
मंदिरमे पूजा
किर्त्तनियाँ मंडली
कऽ रहल अछि
सस्वर सुन्दर काण्डक पाठ
''मंगल भवन अमंगल हारी''
चारूकात बैसल अछि लोक
कीर्त्तन-भजनमे लीन
''मंगल भवन अमंगल हारी''
ककरो कोनो सुधि नहि छै
जे एम्हर-ओम्हर देखत
भक्त, भजन आ भगवान
बस यैह तीनू चीजक उपस्थिति

धरि एहिसँ इतर
दूटा जीव
आरो अछि मंदिरमे
एकटा मारैवला
एकटा अपना आपकेँ
बचाबैवला
गिरगिट आ फतिंगा
फतिंगा पाँखि फड़फड़बैत
उड़ि रहल अछि
एहि कातसँ ओहि कात
इजोतक चारूकात

आ गिरगिट घात लगेने
आक्रमण कऽ रहल अछि
बेर-बेर ओकरा पर
ने फतिंगा एखन धरि
हारल अछि
ने गिरगिट एखन धरि
जीतल अछि
संघर्ष चलि रहल अछि
जीवन आ मृत्युक बीच

ई संघर्ष सभ दिना
चलैत रहैत अछि
कखनो जीवन हारैत अछि
कखनो मृत्यु जीतैत अछि
कखनो जीवन जीतैत अछि
तऽ कखनो मृत्यु हारैत अछि
ई हारि-जीतक खेल
लगले रहैत अछि जीवनमे
अन्तर एतबे
एकटा अपना आपकेँ
बचबैक लेल
संघर्ष करैत अछि
दोसर, दोसरकेँ
मारैक लेल
संघर्ष करैत अछि

एकटाक लेल
हम कहि सकैत छी
ओ धर्मयुद्ध करैत अछि
दोसर पापक भागी बनि

पापयुद्ध करैत अछि
हारि-जीत दुनूमे सम्भव
धरि इतिहास सदैव
धर्मेक संग रहैत अछि
वर्तमान भलेहि
पराभवकेँ प्राप्त करय!

सुख आ दुःख

जीते-जी जीवनमे
सुखो छैक आ दुःखो
जँ जीवन नहि रहय
तऽ कथीक सुख
कथीक दुःख
सभटा एक्के रंग
ने लाल
ने हरियर
ने पीयर
ने गुलाबी

जहिना फूलक सुख
डारियेक संग छैक
चाहे रेगिस्तानमे फुलाय
वा पहाड़ पर
वा समशीतोष्ण
मैदानमे
तहिना मनुखोक सुख
जीवनक संग अछि
चाहे नून-रोटी खाकऽ
गुजारा करय
या छप्पन भोगसँ
पेट भरय

जीवनसँ अलग होइतहि
ने फूल सुखी रहि पबैत अछि

ने मनुख
चाहे फूलकेँ
गंगामे विसर्जित कऽ आबू
वा देवाधिदेव महादेवक
माथ पर चढ़ा आबू
तहिना मृत शरीरकेँ
घीमे बोरि
चाननसँ जराबी
वा जामुनेक जारनिसँ
कोनो अन्तर नहि पड़ैत अछि!

अफवाह

अफवाहकेँ हाथ-पैर
नहि होइत छैक
ओ लोथे जनमैत अछि
एहन कोखिसँ
जकर जमीन
उस्सर आ बंजर
होइत छैक
धरि तैयो
ओ घुमि अबैत अछि
तीनू लोक
जे कल्पनातीत होइत अछि

कखनो-कखनो तऽ
यथार्थ पर अफवाह
एतेक भारी पड़ि जाइत अछि
जे यथार्थकेँ
ताकय पड़ैत छैक
अपनाकेँ सही
साबित करबाक लेल सबूत
आ सबूत जुटबैत-जुटबैत
कखनो-कखनो यथार्थ
हारय लगैत अछि
थाकय लगैत अछि
बिन लड़नहि मैदानसँ
भागय लगैत अछि

कही जे

जंगलक आगि जकाँ
पसरय लगैए अफवाह
आ समेटि लैए
जंगलक सम्पूर्ण व्यवस्थाकेँ
अपन बाहुपाशमे

कखनो-कखनो तऽ
ई आगि
कतेको निर्दोष
जीव-जंतुक
विनाशक कारण
सेहो बनैए
आ जखन
एहि आगिक ज्वाला
शांत होइत अछि
तामे तक
बहुत देर भऽ जाइत अछि
कही जे विनाशे-विनाश
देखाइत अछि!

प्रायोजित

प्रायोजित प्रशंसा
प्रायोजित निंदा
प्रायोजित हिंसा
प्रायोजित शांति
प्रायोजित हँसी
प्रायोजित नोर
प्रायोजित यश
प्रायोजित अपयश
प्रायोजित सुकर्म
प्रायोजित कुकर्म
प्रायोजित संन्यासी
प्रायोजित वनवासी
प्रायोजित दाता
प्रायोजित भोक्ता
प्रायोजित राजा
प्रायोजित प्रजा
प्रायोजित राम
प्रायोजित रावण
एतय एतेक बात
प्रायोजित भऽ रहल अछि ने
जे प्राकृतिक आ
प्रायोजितमे
अन्तर करब
अंतर बूझब
अबूझ लगैए।

अभिनय

अभिनयक लेल
प्रसिद्ध अछि
ई संसार
जे सभसँ पैघ विश्वासघाती
से विश्वासक बात करत
विश्वाससँ

जे सभसँ पैघ चोर
ओ पुलिसक वेषमे
सनहा लिखैत भेटत अहाँकेँ
जे सभसँ पैघ दुराचारी
ओ चरित्र पर
पैघ चर्चा-उपचर्चामे
भाग लेत

जे सभसँ पैघ
अभक्ष भक्षी
से अपनाकेँ
सात्विक साबित करत
जे स्त्रीक चीरहरणमे लिप्त रहत
सैह स्त्रीक अस्मिताक
बातो करैत भेटत

जकरा करोड़क करोड़
रुपैया-पैसा सँ
संतोष नहि हैत

से धनकेँ धूल समान कहैत
प्रवचन दैत नजरि आओत

जकरासँ सभसँ बेसी
प्रेम रहत
सैह अहाँक प्रेमक
व्यापार करत
जे सभसँ समीप रहत
सैह दुश्मनियो निमाहत

एतय एतेक रंगक
अभिनय देखबामे आओत
जे बिसरि जायब
सही की, गलत की
नायक के
खलनायक के
नाटक दुखान्त
या सुखान्त
वास्तविक या काल्पनिक

कखनो-कखनो तऽ
एहि अभिनयसँ
एतेक उबि जायब
जे मोन करत
लिच्छवीक राजकुमार सन
सभ किछु छोड़ि-छाड़ि
एकान्त कोनो जंगलमे
जा बैसी
आ खोज करी
सत्य की, झूठ की!

नेपथ्य

नेपथ्यमे कतय की
भऽ रहल छैक
से लोककेँ
कहाँ पता चलैत छैक
लोककेँ तऽ
एतबे पता चलैत छैक
जे मंच पर
प्रस्तुत कयल जाइत छैक

साज-सज्जा
अभरण-पहिरन
वास्तविक सत्यकेँ
ढँकने रहैए
पूसक कुहेस सन
आ सत्य सूर्य सन बलशाली
आभापुंज रहलाक बादो
दुबकल रहैए
परिस्थितिक हाथे
परवशमे पड़ि

गगनमंडलमे
उपस्थित रहलाक बादो
सूर्यक अस्तित्व
दाव पर लागल रहैए
डेंगी नावमे सवार
कोनो नाविक सन

जे कोन परिस्थितिमे
कतय अर्रा लागत
वा चप्प दऽ
डुमिये जायत
बीच मझधारमे
ओ अपनहुँ
नहि जनैत अछि

मंच पर
जे रामक भूमिका
निभबैत अछि
वास्तवमे
ओकरा हृदयमे
वास रहैत छैक रावणक
मंच पर जे
रावणक रोलमे
उपस्थित होइत अछि
चरित्रमे ओ
रामोसँ बेशी
आदर्श जन-कल्याणकारी
रहैत अछि
सीताक ताना-बानामे
शूर्पनखाक चरित्र
सीतोसँ उज्ज्वल

कखनहुँ– नेपथ्य
कोनो हालमे
सत्यकेँ साबित
नहि होमय दैत अछि
सत्यकेँ साबित

तऽ करैत अछि– मंचे
कखनो कोनो परिस्थितिमे
ककरो हाथे
अभरण-पहिरन
साज-सज्जा
उतारलाक बाद
नग्न आ वास्तविक रूपमे
जखन ठाढ़ होइत अछि सत्य
नेपथ्यक सभ पर्दा
उठि जाइत अछि सहजहिं

नेपथ्य! रूप परिवर्तनमे
भले हो माहिर
मुदा मंच तऽ मंच होइत अछि
जतय नेपथ्यक सत्यकेँ
बेसी काल धरि
दाबिकऽ
नहि राखल जा सकैए
ओकर गरदनि
नहि मरोड़ल जा सकैए
सत्य सभ परिस्थितिमे
सत्ये रहैत अछि
मुदा नेपथ्य
चरित्र परिवर्तनक लेल
जानल जाइत अछि।

जे जतेक धनीक से ततेक दरिद्र

आइ भोरे बजेने रही
कबाड़ीवलाकेँ
कबाड़ीक किछु सामान
देबाक लेल
रद्दी पेपर बेचबाक लेल
पूजा-पाठक समय लगिचायल अछि
घर आब नहि साफ करब
तऽ नहि हैत
पाबनियो-तिहारक
की कोनो कम सरंजाम करय पड़ैत छैक
एकहक टाकेँ खढ़ ओरियाउ
तहन घर लगैत छैक
सुव्यवस्था होइत छैक
आ ई घर-परिवारक सुव्यवस्था
पाबनि-तिहारक तरद्दूत
तऽ सालो भरि लगले रहैत छैक

से जे कहय लगलहुँ
हमरा पेपर-रद्दी
लऽ जयबासँ पहिले
वर्मा जीक घरवाली
बेचय लगलीह
रद्दीवलाक हाथे
रद्दी पेपर
एतय धरि तऽ ठीक छल
धरि पेपरो तौलैत छलथि

अपने हाथे
से हमरा आश्चर्य लागल
जे वर्मा जीक घरवाली
अपना हाथे
फूलो नहि तोड़ैत छथि
से पेपर तौलैत छथि अपनहिं
हुनक कहब छल
कबाड़ीवला ठीकसँ
नहि तौलैए
डंडी मारिकऽ
नफा कमाइए
सेहो जे केलीह से केलीह
मुदा पाँच रुपया भजोखा
कबाड़ीवलाक पास नहि रहने
ओ जे रंगताल केलीह
से कहल नहि जाइए
बेचारा कबाड़ीवला
कतेक तरहें बुझेलखिन
वर्मा जीक घरवालीकेँ
''मलकिनी, नहीं है खुल्ला
रहता तो दे देता
और यही पाँच-दस रुपया
तो हम कमाते हैं आपलोगों से
वरणा बचता ही क्या है?''

मुदा नहि मनलखिन
वर्मा जीक घरवाली
कहलखिन—''इस तरह से हम
पाँच-पाँच रुपया छोड़ने लगे तो
कंगाल हो जाएँगे

ऐसे ही नहीं न पहुँचे हैं
यहाँ तक।''
सरिपहुँ बहुत दूर धरि
पहुँचि चुकल छथि
वर्मा जी आ वर्मा जीक घरवाली
तखने ने घरमे
स्थायी नौकर रखने छथि
सभ काज करबाक लेल
दू-दू टा चारि चक्का गाड़ी
गैरेजक शोभा बढ़ा रहल छनि
बेटाक बियाह करताह अगहनमे
सुनैत छी जगन्नाथपुरीक तट पर हैत
कपड़ा-लत्ता वर्मा जीक घरवाली
एहेन विशेष पहिरैत छथि
जे लोककेँ देखि-देखि
सख लगै छैक
ढोरल-राँगल हुनकर मुँह
पचपनो मे पैंतीसे सन
बुझना जाइत छनि
कतहुसँ कोनो कोन
एहेन खाली नहि अछि
जकरा भरबाक लेल
अलगसँ कोनो उद्यम
करय पड़नि हुनका
तैयो पाँच रुपैया लेल
तैशमे देखि हुनका
हमरा इहे अनुभव भेल
जे जतेक धनीक
से ततेक गरीब अछि।

भेद

सभ राति
कनैत अछि कुकुर
आठसँ दस बजितहिं
एहि माधक
हाड़ गलबैवला जाड़मे
गली-मोहल्ला
चौक-चौराहा
यत्र-तत्र
हेंजक हेंज इकट्ठा भऽ
दर्दोकेँ
अपन सम्बन्ध होइत अछि
जे जाति, वर्ग, सम्प्रदाय
मनुख-जानवर सभसँ
ऊपर रहैत अछि

ओकर कानबामे
एकटा एहेन आर्त्तनाद अछि
जे सीरक परसँ कम्बल
ओढ़लाक बादो
व्यथित करैत अछि हमरा
आ लाख कोशिश कयलाक बादो
आँखिमे निन्न नहि आबय दैए

सर्दी-गर्मीक अनुभूति
ओकरो ओहिना होइत छैक
जहिना की हमरा

भूख-प्यास ओकरो
ओहिना लगैत छैक
जहिना की हमरा
सुख-चैनक बेगरता
ओकरो ओहिना पड़ैत छैक
जहिना की हमरा
धरि ओकरा लग
हमर सुख-सुविधाक
हजार साधनमेसँ
एको नहि छैक
जखन कि प्रकृति
मनुख आ अन्य जीवमे
नहि करैत अछि
कोनो भेद।

अपना बढ़िकऽ भोज

दादाकेँ देखियनि
नोतक पतियानीमे
जखन अपना बाल-बच्चा लग आबथि
तऽ उझीलि देथिन
तौला महक दही
कोहा महक चीनी
बाल्टीन महक बड़ी-तरकारी
आ एहि तरहें
पुनीता-सुनीताक संग-संग
बेचन आ माँगैन
अछिंजरे भऽ कऽ खाय

ताहि दिनमे
हम नेना रही
नहि बुझियै
एकहि पाँतीमे बैसल
अपना आ पुनीता, बबीताक बीच
भेदक मादे
सोची दादा जहन
पुनीता, बबीता, बेचन, माँगैनक
पात परसँ
बड़ी-तरकारी, दही-चीनी
बहा सकैत छथि
तऽ हमर पात
कियैक रहि जाइत अछि खाली
आ अँगना आबी तऽ

माइ-मैंयाँ लग
करी एहि बातक चर्चा
माइ-मैंयाँ दुनू दोहराबथि
एकहि फकरा—
''अनकर दालि-चार
अनकर घी
हमरा परसैमे लगैए की
अपना बढ़िकऽ भोज
लोक एहिना करैए''

ताहि दिनमे
अपना बढ़िकऽ भोजक अर्थ
सेहो नहि बुझी
आ संतोष कऽ ली
अपना पात पर आयल
कठुएलहा बड़ी
एकरत्ती दही
चुटकी भरि चीनी पर

आब जखन की
दिन-दुनियाँ देखलहुँ
तऽ बुझय लागल छी
अपना बढ़िकऽ
भोजक अर्थ
आ ई भोज खेनिहार
आ परसनिहार
दादे आ दादेक कुटुम्ब टा नहि
दादा सन-सन
अनेक बारीक
अनेक सखा-सम्बन्धी

पसरल अछि
साहित्यसँ समाज धरि
जकर एकमात्र लक्ष्य होइत अछि
अपना बढ़िकऽ भोज करब
''देशे काले च पात्रे च''
ओकरा लेल
ने काल्हि अर्थ रखैत छल
ने आइ अर्थ रखैत अछि।

जल-हवा

आइसँ पच्चीस साल पहिले
जखन हम करीब-करीब
चौदह-पन्द्रह सालक होयब
वैशाख-जेठक दुपहरिया हमर
कलमे-गाछीमे बीतय
आम ओगरैत
टिकुला बिछैत
आमक डारि पर
झूला लगबैत
गोटरस, रंग-रंग, सिंगी-पतासी
सतघरिया, हत्था-गोदीसँ लऽ कऽ
अनेक तरहक खेल
जकर आब नामो नहि मोन अछि
संगी-सहेली संग खेलैत

ताहि दिनमे
तापमानक ध्यान नहि रहय हमरा
आ ने तापमान नपबाक
कोनो तरहक यंत्र
मुदा एतेक अवश्य बुझी तहियो
जे माथक घाम
जखन पैर दने बहैत छैक
तऽ तापमान बढ़ि जाइत छैक
आ एहिये असह्य गर्मीसँ
मुक्तिक लेल
करय लागी

नानाविध उपाय

कलमसँ सटले रहय
एक दिस सत्ती पोखरि
आ दोसर दिस
आड़ा पोखरि
सत्ती पोखरिक महार पर रहय
विशाल पीपरक गाछ
आ आड़ा पोखरिक मोहार पर
चतरल पाकड़िक गाछ
जखन-जखन बहय लागय
माथसँ घाम
बुझाय लागय
गर्मी असह्य
चलि जाइ
ओहिये सत्ती-आड़ा पोखरिक मोहार पर
आ बैसि रही
ओहि पीपरक आ आमक गाछ तर
पाकल खसल पात
समेटि-समेटि

पोखरिक पानिकेँ स्पर्श करैत
जे हवा तनकेँ स्पर्श करय
ओ एकदम शीतल
माथक घाम पोछयवला
तनक ताप मेटबैवला
जकरा दऽ लोक कहय
ई साधारण हवा नहि
जल-हवा छी
जकर ताप

पोखरिक पानिमे
समाहित भऽ जाइत अछि
आ शीतलता रहि जाइत अछि शेष

आब हमरा लग
जखन कि नहि कलम-गाछी अछि
आ नहि सत्ती आ आड़ा
पोखरिक मोहार
पीपरक आ आमक गाछक
कल्पने करब
एहि चोंचाक खोंतानुमा
पैघ-पैघ अपार्टमेन्टमे
दिवा-स्पप्ने होयत
तहन मोन पड़ि रहल अछि
एहि नव-नव लागल
ए.सी.क शीतल हवामे
अपन नेनपनक जल-हवा
आ एकरे हवाकेँ
जल-हवा मानि
संतोष कऽ रहल छी
अपन अतीतक
सुखद स्मृतिकेँ
वर्तमानमे
मोन पाड़ि-पाड़ि
एक बेर फेरसँ।

आस्था

काल्हि गेल रही
अपना रोडसँ
सटले जे रोड अछि ओतय
जकर नाम छी घुड़दौड़
एकर नाम घुड़दौड़ कियैक पड़ल
एकर खास ऐतिहासिकता
हमरा नहि पता
मुदा एतेक सुनबामे
अबैत अछि जरूर
जे आजादीसँ पहिने
अंग्रेज एतय
घोड़ा दौड़बैक प्रतियोगिता
रखैत छल

ओहि घुड़दौड़क चौबटिया पर
पहिने एकटा शिवमंदिर छल
जे विकासक क्रममे
ध्वस्त कऽ देल गेल
आ शिव विस्थापित होइत
स्थापित भऽ गेलाह
आस्थावान लोकक हाथे
नीमक जड़िमे

किछु दिनक बाद
दुर्भाग्य कही वा दैव संयोग
ओ नीमक गाछो सुखा गेल

आ शिव भऽ गेलाह
फेरसँ आश्रयहीन
लोकक आस्था
तैयो कम नहि भेल

काल्हि हम देखलहुँ
कतेको वर्षक बाद
पुनः नीमकेँ पुनगैत
आ स्त्री सभकेँ
ओहि नीमक जड़िमे बैसल
कीर्त्तन-भजन करैत

हमरा एकोरत्ती
आश्चर्य नहि लागल
आस्थाप्रधान एहि देशमे
जकर धर्म-ध्वज
पुरुष थम्हने रहैत अछि
आ आस्थाक दीप
स्त्री जरबैत अछि
कोनो तरहक चमत्कार
सम्भव अछि
सम्भव अछि बहीरो
सुनय लागय
आ बौको बाजय
मरलो लोक जीबि उठय
आ भारी झंझावातमे
बिन नावो
सागर पार उतरि जाइ!

गाछसँ टूटल पात

माइ कहैत छलीह
औरदा रहैत छैक लोककेँ
तऽ काँटो लागिकऽ
प्राण बचि जाइत छैक
पहिने हमरा लेल
ई माइक मुँहसँ सुनल
एकटा किंवदंती सन छल
बहुतो बात माइ कहैत छथि
किछु प्रमाणितो होइत अछि
किछु आयल-गेल सन
रहि जाइत अछि

मुदा एहि बेर
अपना आँखिसँ देखि रहल छी
लोकोक्तिकेँ
सत्यमे साबित होइत
पन्द्रह दिन पहिने
बड़क गाछसँ
एकटा ठाढ़ि
तोड़ने रही
वट-सावित्रीक पूजा लेल
आ ओहिये ठाढ़िसँ
टूटल रहय एकटा पात
जकरा हम
गमलामे गाड़ि देल ओहिना

दू-चारि दिनमे
टूटल ठाढ़ि सुखा गेल
आ पात गमलामे
बियालिस डिग्री टेम्परेचरक बादो
एखन धरि अछि जीबैत
जड़िहीन/शाखाहीन
हमरा एहेन सामान्य लोकक लेल
ई असमान्य बात बुझाइत अछि

हम जनैत छी
जड़िविहीन
शाखाहीन
ई पात
कतेक दिन जीयत
धरि जतेक दिन जीबैत अछि
हमरा लेल
कौतुहलक विषय रहत अवश्य

भगवान कतय छथि
केहेन छथि
छथियो या नहि छथि
ई हम नहि जनैत छी
मुदा एतेक अवश्य जनैत छी
जे कोनो परमशक्ति अछि अवश्य
जे चाहय तऽ
सम्पूर्णों गाछकेँ
सुखा सकैत अछि
आ जे नहि चाहय तऽ
पातो जीबैत रहत
एहिना एहि गमलाक पात सन।

भिखमंगनी

एहि आतप कालमे
जतय कि सूर्य
जड़िकऽ उगि रहल अछि
आ पारा पैंतालिस पार
आकुल-व्याकुल लोकमे निर्धन
छाहरि ताकि रहल अछि
आ सुखी-सम्पन्न लोक
समशीतोष्ण वातावरणमे
खिड़की-केबाड़ बंद कयने
दुपहरिया बीता रहल अछि
ओ फाटल, चेफरी लागल
मलिन वस्त्र पहिरने
भिखमंगनी बनल
दुआरिये दुआरि
दरबज्जे-दरबज्जा
बौआए रहल अछि
पेटक खातिर
हाथ पसारि रहल अछि

ई जे पेटक आगि होइत छैक
ओ सहस्त्रो सूर्यक आगिसँ
बेसी ज्वलनशील
जकरा कोनो भदबरिया मेघ
नहि मिझा सकैए
समय बदलल अवश्य
मुदा एतबो नहि बदलल

जे सभक हाथ आ पेट
हो भरले हरदम
सभसँ दुखद आ सोचनीय बात
तऽ तखन बुझना जाइत अछि
जखन माँगैवला हाथसँ छोट
भऽ जाइत अछि
देबयवला हाथ
आ दाता याचकसँ बेसी गरीब!

अछूत

भनसाघरक चिनबारमे राखल अछि
एकटा कप
एकटा गिलास
ई वैह कप-गिलास छी
जाहिमे नुनूआँ
हकासल-पियासल अबैए अमारहीसँ
तऽ पानि पिबैए
चाह पिबैए
एहि कप
आ एहि गिलासकेँ
घरक अन्य कप-गिलास संग
मिज्झर होयबाक अधिकार
नहि छैक
ई अछूत अछि
एहि घरमे
एहि समाजमे
नुनूएँ जकाँ

समाज विकास कयलक
परिवार उदार भेल
सैह कारण अछि
जे नुनूओं लेल चाह
बनबैत छथि काकी
अपना हाथसँ
अपन चुल्हापर
कने इलायची

कने आद दऽ कऽ
आ जखन पीबय लगैए
नुनू चाह
तऽ पुछैत छथि प्रेमसँ
“नुनू चाह केहेन बनलौ?”

धरि एतेक उदार
नहि भेल अछि
परिवार-समाज
जे नुनू संगे बैसिकऽ
एके कपमे चाह पीयत
एके गिलासमे पानि पीयत
एके थारीमे भात-रोटी खायत
नुनू आ बड़का काकाक बीच
जे विभेदक रेखा छल
से कम जरूर भेल अछि
मुदा मेटायल नहि अछि एखनो!

इच्छा-1

मोन होइए
खूब झाड़िकऽ
वर्षा होइतय
ओतेक झाड़िकऽ
जतेक बीस साल पहिने
होइत छल
जहिया नेना रही
जहिया गामे रही
आ हम ओहि वर्षाक पानिमे
छप-छप-छप-छप करितहुँ
जेना गाममे करैत रही
भरि अँगनामे करैत रही
अपन खरिहान आ खरिहानसँ सटल
बीच सड़क पर करैत रही

होइए ततेक वर्षा होइतय
जे हम ओहि वर्षाक पानिमे
कागजक नाव चलबितहुँ
कबै-गड़चुन्नी
माछ पकड़ितहुँ
ओना माछ पकड़िकऽ
आब की फायदा
आब तऽ हम शाकाहारी छी
जे साग-पात भेटैए
से हम खाइत छी
राम-राम जपैत छी

होइए ततेक वर्षा होइतय
जे हम दिन-राति
पड़ल रहितहुँ
पलंग पर
आ गबितहुँ
पुरने गीत—
'सखि हे सावन के बुनझीसी
पिया संग खेलब पचीसी ना'
ई आइ कएक दिनसँ
टिप-टिप-टिप-टिप करैए
नहि बरसैए
आ नहि बाट छोड़ैए!

इच्छा-2

केहेन धिया-पुता सभ
खाकऽ पड़ल अछि
दस बजे दिन तक
सुखक निन्नसँ
भरल छै आँखि
सुतिकऽ उठत तऽ
माय एतै आगू
हाल-चाल पुछतै
देह-हाथ हँसोथतै
आँचरसँ मुँह पोछतै
आ फेर एतै आगू
नास्ता-पानिक प्लेट

कोनो चिंता-फिकिर नहि
दिन की बनत
राति की बनत
घरक सामान सठल
या अछि एखन बाँकी
व्यवस्था कतयसँ हेतै
कोना हेतै
कोनो लेना-देना नहि
मात्र स्वादसँ मतलब
भेराइटीसँ मतलब

हमरो इच्छा होइए
एहिना निश्चिंत

पड़ल रहितहुँ बेड पर
जाबत धरि मोन करितय
आ सुतिकऽ उठितहुँ
तऽ स्नेहसँ कियो
पोछितय मुँह
हँसोथितय माथ
पुछितय मोनक हाल
करितय स्नेहसँ बात
आ इच्छानुरूप
परोसितय प्लेट

हमरो इच्छा होइए
जीवनमे कोनो चिंता
नहि रहितय
हमर चिंता करयबला
होइतय कियो आन
ई नून-हरदिक झंझटिसँ
भऽ जइतहुँ मुक्त
एहि तीमन-तरकारीक व्यवस्थासँ
भऽ जइतहुँ कात
दिन-रातिक चिंतासँ
भऽ जइतहुँ अलग

धरि से तऽ आब
नहि हैत एहि जीवनमे
कतेको हमर चिंता करयबला
हमर आत्मीय जन
हमरासँ दूर भऽ गेलाह
प्राकृतिक व्यवस्थाक तहत
जे किछु बचलो छथि

ओ कृत्रिमतामे लटपटायल
जे भाव तऽ दूरक बात
बातो बुझता
से सुनिश्चित नहि कहल जा सकैए
करता की आ बजता की
सेहो नहि कहल जा सकैए
किछु कहले नहि जा सकैए
हँ, एतेक अवश्य कहल जा सकैए
पजेबोक देबालसँ
बेसी मजबूत भऽ गेल अछि
जलनशीलताक देबाल
जकरा नहि तोड़ल जा सकैए
एहि जीवनमे!

संतुलन

भोरका चाह
असगरे नहि पीबैत छी हम
असगरे नहि पीबैत छथि ओ
हम दुनू मिलिकऽ
एके जगह
एके रंगक कपमे पीबैत छी
हँ, चाहक स्वाद
दू रंग अवश्य रहैए
एकक कने मीठ
दोसरक कने फीका
आ ई स्वादक अन्तर
प्रायः जीवनसँ
जुड़ि गेल अछि
बहुतो लोकक संग

से चाह पीबैत-पीबैत
बहुत रंगक बात
कऽ लैत छी हम दुनू
एक-दोसराक संग
परिवार-समाज
देश-दुनियाँ
राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक
एही बात सभक क्रममे
आइ एकटा बात उठल
जन्म टिप्पणिक
त कहलथि ओ

‘अँय यै, अहाँसँ पाँच साल पैघ
अहाँक भायक टिप्पणि
पिता बनेलथि आ अहाँक नहि’
कहलियनि हम—
‘हमर पिता की
ककरो पिता
नहि बनबैत छलथि ताहि दिनमे
बेटीक टिप्पणि
बेटी लोक चाहैत नहि छल
बेटी भऽ जाइ छलै’

कहलनि अपने—
‘आब से बात नहि रहल
बेटा-बेटी दुनू बराबर अछि’
कहलियनि हम—
‘हँ, से तऽ छैक
धरि एखनो लोकक
पहिल इच्छा बेटे रहैत छैक
भलेहिं जे होउ’
ओ तऽ सुकूर अछि
मायक कोखि पर
मनुखक अधिकार
नहि भेल अछि एखन धरि
नहि तऽ बिगड़ि जइतय
दुनियाँक संतुलन
कतहु कोनो देशमे
अगबे पुरुषे पुरुष होइतय
आ कतहु कोनो देशमे अगबे
स्त्रीये स्त्री रहितय!

स्वर्ग आ नर्क

सुखक अन्तिम गन्तव्य
स्वर्ग छी
एहिसँ ऊपर
एखन धरि
नहि पहुँचल अछि
मनुखक सोच
ओकर भावना
ओकर कल्पना
ई स्वर्ग कतय अछि
केहेन अछि
ककरो नहि पता
हँ, एते धरि जरूर कहब
स्वर्गसँ ऊपर
नहि उठि सकल अछि
मनुखक सोच

तहिना दुखक अन्तिम सीमा
नर्केकेँ मानल गेल अछि
एहिसँ कठिन
एहिसँ दारुण
एहिसँ असहनीय दुखक
लोक एखन धरि
कल्पना नहि कयलक अछि
एहिसँ बेसी गर्तमे
लोक नहि खसल अछि

आ ई स्वर्ग कतय अछि

ककरो नहि पता
ई नर्क कतय अछि
ककरो नहि पता
लोककेँ किछु पता नहि छैक
एहि स्वर्ग-नर्कक मादे
लोक मात्र कल्पना करैत अछि
स्वर्ग ऊपर हैत
बहुत ऊपर
जतयसँ ऊपर आरो
नहि जा सकैत अछि लोक
तहिना नर्कोक विषयमे
लोक सोचैत अछि
जे नर्क निच्चाँ हैत
एतेक निच्चाँ
जे ओहिसँ बेसी निच्चाँ
नहि जा सकैत अछि लोक

मुदा हमर अनुभव कहैत अछि
ने स्वर्ग ऊपर अछि
ने नर्क निच्चाँ
ई दुनू एही धरती पर अछि
संग-संग चलैत
पलैत-बढ़ैत
एकहि जीवनमे
लोककेँ कए-कए रंगक
तीत-मीठ अनुभव करबैत
कालक गतिये
जीवनमे
कखनो स्वर्गक भोग अबैत छैक
तऽ कखनो नर्कक वेदना सतबैत छैक!